उद्‌बोधन स्वयं को

[परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर १००८ श्री नानेश
के २५वें आचार्य पर्व के पुनीत उपलक्ष्य में]

श्री शान्ति मुनि

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर

☐ पुस्तक

उद्‌बोधन स्वयं को

☐ उद्‌बोधक

श्री शान्ति मुनि

☐ संकलन

दीपचन्द सचेती,
जैन सिद्धान्त प्रभाकर
धुलिया (महाराष्ट्र)

☐ प्रकाशक ·

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर-३३४००१ (राज)

☐ मूल्य रु० ८.००

☐ संस्करण · १९८६

☐ मुद्रक

फ्रेण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३

प्रशान्त मनस्वी

उद्भट व्याख्याता

समत्व योगी

आचार्य श्री नानेश

को।

इन्हीं की अमृतदेशना

से प्रसूत जिन

उद्बोधन

सौरभ सम्पदा

समर्पित

समुद्र मे जिस प्रकार दूर तक गगा का पाट दिखाई देता है वैसे ही जैन धर्म के समुद्र मे आचार्य प्रवर की यह धारा एक दम अलग-थलग सी परिलक्षित होने लगी। यहा से फिर साधुमार्ग मे एक क्रान्ति घटित हुई। जिस क्रान्ति की धारा पश्चात्वर्ती आचार्यों से निरन्तर आगे बढी। आज हमे परम प्रसन्नता है कि समता विभूति, विद्वद् शिरोमणि, जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिवोधक, समीक्षण ध्यानयोगी आचार्य श्री नानेश के सान्निध्य की हमे प्राप्ति हुई है। विशुद्ध सयम पालन के साथ-साथ आपके सानिध्य मे आपके शिष्य-शिष्या रूप साधु-साध्वी वर्ग ने सम्यक् ज्ञान-विज्ञान की दिशा मे आश्चर्यजनक विकास किया है।

प्रस्तुत ग्रथ के प्रणेता पण्डित रत्न श्री शान्ति मुनिजी आपके हो विद्वान् शिष्य है। आपने साहित्य की विविध विधाओ मे प्रेरणादायी, जीवनोत्कर्षकारी, सत् सस्कार वर्धक कई कृतियो का सृजन किया है।

शान्त क्रान्ति के अग्रदूत स्वर्गीय आचार्य श्री गनेशीलाल जी म० सा० की स्मृति मे श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन सघ ने रतलाम मे श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार की स्थापना की। ज्ञान भण्डार मे अनेकानेक प्रकाशित एव हस्तलिखित ग्र थो का सग्रह हुआ है। हस्तलिखित अप्रकाशित ग्र थो का सचयन कर उन्हे भी अ० भा० साधुमार्गी जैन साहित्य समिति सर्वजन हितार्थ प्रकाशित कर रही है। इसी सकल्प की क्रियान्विति मे इस कृति को भी श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार से प्राप्त कर प्रकाशित करने मे सघ हार्दिक सतुष्टि का अनुभव कर रहा है।

प्रस्तुत अभिव्यक्ति मे इसी प्रकार के कुछ उद्‌वोधनो का सकलन है—जो समय-समय पर विचाराभिव्यक्ति के रूप मे प्रकट होकर सकलित होते रहे है। इन उद्‌वोधनो की शैली मे प्रवचन की शैली का अनुकरण-अनुसरण है, किन्तु ये उद्‌वोधन अपने आप मे वर्गीकृत विपयानुरूप प्रवन्ध है, जो अपने शीर्पक के इर्द-गिर्द ही परिक्रमा करते दिखाई पडते हैं।

प्रस्तुत कृति के कुछ प्रवन्धो के सकलन-सम्पादन मे धुलिया निवासी स्वाध्यायशील प्रवुद्ध विचारक वन्धु श्री दीपचन्दजी सचेती का श्रम अविस्मरणीय है।

सम्भव है ये उद्‌वोधन हमारी स्वय की चेतना को एक स्वस्थ दिशा प्रदान कर दे और हमारे भीतर आत्म जागरण का एक दीप जल उठे।

—शान्ति मुनि

जितने भी धर्म और दर्शन विकसित हुए है, उनका मूल उद्देश्य व्यक्ति को अपने स्वभाव से परिचित कराना है। स्वभाव याने उसकी अनन्त शक्ति का अनुभवन। इस अनन्त शक्ति का साक्षात्कार अपने कर्तृत्व और पुरुषार्थ को जाग्रत कर ही किया जा सकता है। यह जागृति स्व-सम्मुखता से ही सभव है। इसमे शोर नही मौन आवश्यक है, उत्तेजना नही, सवेदना अपेक्षित है, अध्ययन नही स्वाध्याय अपरिहार्य है। आज अध्ययन के तौर-तरीके इस हद तक विकसित हो गये है कि उन्होने स्वाध्याय की कला को ही निर्वासित कर दिया है। इसीलिए ज्ञान का इतना विस्फोट होने पर भी शाति नही है, प्रेम नही है, सहिष्णुता नही है। ज्ञान जब तक दूसरो को उपदेश देने के लिए रहेगा, वह मकडी के जाले की स्थिति से ऊपर उठेगा नही। जब ज्ञान अन्तर्मुखी होगा, मधुमक्खी की तरह अलग-अलग नाम-रूप ससार के फूलो से पराग ग्रहण कर उन्हे अभेद रसमय दृष्टि प्रदान करेगा, तभी वह प्राणी मात्र के प्रति मैत्री सम्बन्ध जोड सकेगा। भगवान् महावीर की यही जीवन-दृष्टि थी। इसीलिए ज्ञानी होने का सार अहिसक होना कहा है।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के विद्वान् सुशिष्य पडित रत्न श्री शाति मुनिजी बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। उनमे कारयत्री एव भावयत्री प्रतिभा का अनूठा सगम है। वे सहृदय कथाकार, सवेदनाशील कवि, मधुर गीतिकार होने के साथ-साथ तत्त्वदर्शी आगमवेत्ता, ओजस्वी वक्ता, अध्यात्म-वादी समीक्षक और आत्मानुलक्षी विवेचक है।

प्रस्तुत पुस्तक 'उद्‌बोधन स्वय को' मुनिश्री के आत्म-

अर्थ-सहयोगी—
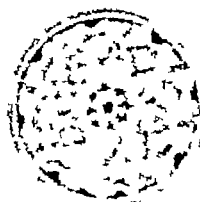
स्वर्गीय श्री भंवरलालजी बैद

हरेक जीवन की कहानी एक सी नही होती। कहा से शुरु होती है कहानी यह जानना तो है बहुत आसान, लेकिन किस मुकाम पर यह समाप्त होगी और क्या शेष रह जायेगा उसके बाद, यह जानने की कोशिश ही मनुष्य के व्यक्तित्व को मुखरित कर सकती है, उसे गगन की ऊचाइयो तक पहुँचा सकती है। जीवन के सही मायने को तटस्थता पूर्वक समझकर, उसकी उपयोगिता का सही विचार कर, आत्मचिंतन करते हुए जिन्होने सहज ही मुखरित कर लिया था अपने व्यक्तित्व को, उस व्यक्ति का नाम है—भवरलाल जी वैद।

अब नही है वे परिजनो के बीच, लेकिन शेष है उनके उसी व्यक्तित्व का प्रेरणाप्रद स्मरण, भक्तिप्रियता, सहज स्वभाव और मिलनसारिता की मिसाल। स्व भवरलाल जी राजनादगाव (म प्र) निवासी सुश्रावक जीवनचन्दजी वैद के वरिष्ठ सुपुत्र थे। घर, परिवार के आत्मीय संस्कार व माता-पिता की धर्म प्रेरित पारम्परिक निष्ठा ने उन्हे सहज ही प्रभु-भक्ति की ओर मोड दिया था।

रचना की उन्होंने स्वय भक्ति गीतो की। उन्हे स्वर भी दिया जिसे आज भी गुनगुनाते और गाते है, भक्ति के रसिक

युवा, वयस्क और बालक भी। बुजुर्गों के बड़े प्रिय पात्र थे भंवरलालजी। युवकों के अनन्य सहयोगी, बच्चों के प्रिय "भैया" और अन्य सभी के स्नेही। ऐसे व्यक्तित्व की पुण्य स्मृति में प्रकाशित यह पुस्तक मानव मात्र को जीवन व जगत के प्रति सही दृष्टिकोण को विकसित करने व आत्म साधना की ओर प्रेरित करने में सहायक बने। यही मंगल कामना है।

उद्बोधन-क्रम

—□—

है, लेकिन कभी एकान्त मे बैठ कर स्वय को नही सुना पाते। दूसरो को जगाते हैं, लेकिन स्वय को नही जगा पाते। समस्त साधना का उद्देश्य है स्वय को सबोधित करना—जगाना। समस्त ध्यान स्वय की चेतना पर केन्द्रित हो। दुनिया की निरर्थक चर्चा छोडें। स्वय को देखे। हम पराई चर्चा मे रस लेते चले आ रहे है। हम स्वय के भीतर मे झाककर नही देखते कि हमारे भीतर भी कितना सत्य और आनन्द का प्रवाह वह रहा है। हम उसे देख नही पाते। हमारा ध्यान उधर नही जाता। हमारा जीवन अनन्त सभावनाओ का एव अनन्त रहस्यो का केन्द्र है। किन्तु जीवन को हम समझ नही पा रहे है।

जीवन एक सात मजिला मकान :

वर्तमान मनोविज्ञान हमारे जीवन को Seven Stories Life कहता है। सात मजिल वाला जीवन मानता है। हम बीच की मजिल मे हैं। तीन मजिल ऊपर हैं, तीन मजिल नीचे। हम ऊपर झाकते है न नीचे। ऊपर क्या रहस्य है, नीचे क्या रहस्य है। हम पहचान नही सके। मनोविज्ञान की दृष्टि से योग साधना मे 7 प्रकार के चक्र माने गये हैं। विज्ञान ने सात मस्तिष्क की कल्पना की है। मनोवैज्ञानिक फ्रायड एव युग के अनुसार कॉन्सियस माइड, अनकॉन्सियस माइड, सब-कॉनसियस माइड, कलेक्टिव कॉन्सियस माइड आदि सात प्रकार के मस्तिष्क माने गये हैं। चेतन मन, अचेतन मन, अवचेतन मन आदि उसके नाम है। हम एक ही स्थिति मे जी रहे है। जीवन मे बड़ी शक्ति के प्रवाह वह रहे है। लेकिन भीतर की शक्ति की तरफ हमारा ध्यान नही

करे । इससे वृक्ष को पीडा होती है। यह मन का विवेक है। मन और वचन मे जो तरगे उठेगी, उसकी प्रतिक्रिया वृक्ष पर अवश्य होगी। और यदि बोलना हो तो मुनि बोल सकते हैं कि यह वृक्ष छायादार है, फलो से लदा है, पथिको को शाति प्रदान करने वाला है । एकेंद्रिय जीवो का भी मनोविज्ञान जैन दर्शन ने जितनी सूक्ष्मता से विशद रूप से किया है, उतना किसी भी अन्य दर्शन ने नही किया। विज्ञान भी इसे मान्यता दे रहा है ।

वैज्ञानिक प्रयोग—वनस्पति के सन्दर्भ मे :

अभी अमेरिका मे एक वैज्ञानिक प्रयोग हुआ । एक कमरे मे दो गमले रखे गये। बारी बारी मे एक एक ऐसे पाच व्यक्ति कमरे मे छोडे गये। उन्हे हिदायत दी गयी कि कमरे मे जाकर वे सिर्फ दोनो गमलो को दूरी से देखकर लौट आवें। इस तरह पाचो के लौट आने के पश्चात् छठे को कहा गया कि तुम अन्दर जाकर एक गमले के पौवे को तोड मोड उखाड फेंको। उसने वैसा ही किया। एक घण्टे के पश्चात् पाचो को अन्दर भेजा गया । उस दूसरे पौधे को विजली के तारो के माध्यम से एक आलेख सयत्र से जोडा गया और क्रमश पाचो व्यक्ति अन्दर गए किन्तु कोई आलेख प्राप्त न हुआ। वे पाचो बाहर आ गये। फिर छठे आदमी—जिसने पौधा उखाड फेंका था को अन्दर भेजा गया । उसके कमरे मे प्रवेश करते ही सयत्र पर आलेख प्राप्त हुआ। उस आलेख को पढा गया। पौधे मे भयकर स्थित्यतर हुए थे। मेरे पडोसी पौधे को इस व्यक्ति ने जीवन रहित किया। यह हत्यारा है । कही यह मुझे भी जीवन रहित न कर दे। इन भावनाओ से, भय के मारे

अनुनय पर उका भगत ने साधना का रहस्य वताया । श्रीकान्त, अमावस के दिन रात के 8 वजे तुम श्मशान भूमि मे जाकर ध्यानस्थ वैठो । रात के 12 वजे एक डरावनी आवाज आयेगी । डरना नही । 1 वजे मनोहारिणी आवाज आयेगी । उसमे उलझना नही । रात 2 वजे एक दैवी (देवता की) आवाज आयेगी "कुछ माग लो ।" कुछ मागना नही । देव आग्रह करे तो कह देना "पहले आप मेरे सामने प्रत्यक्ष रूप मे प्रकट हो जाइये, फिर मुझे जो कुछ देना हो दे देना । जव देव सामने आ जाये तो भविष्य ज्ञान की विद्या माग लेना ।

इन वातो का पालन करना । सम्भव है, तुम्हे वह विद्या प्राप्त हो जाये ।"

नवकार मन्त्र और दैविक शक्ति :

श्रीकान्त श्मशान मे गया । ठीक उसी प्रकार क्रमवार घटनायें घटी । देवता की आवाज आयी । श्रीकान्त ने कहा कि मुझे प्रत्यक्ष दर्शन दो । देव मौन हो गया वाद मे देव ने वताया—"श्रीकान्त तुम नवकार मत्र के उपासक हो । यदि तुम वादा करो कि नवकार मत्र की उपासना छोड दूगा, तो तुम्हे यह विद्या प्राप्त हो सकती है । मैं प्रत्यक्ष तुम्हारे सामने प्रकट नही हो सकता । क्योकि नवकार मत्र के प्रभाव मे तुम्हारे इर्द-गिर्द जो आभामण्डल है, उसमे प्रवेश करने की मेरी शक्ति नही है । तुम यह उपासना छोड़ दो ।"

श्रीकान्त विचार करता है कि यदि नवकार मत्र मे इतनी शक्ति है कि देव भी मेरे पास आ नही सकते । दैवी शक्ति ने भी इस मत्र की शक्ति ज्यादा है, तो इसे क्यो छोड़ ?

भगवान महावीर की कृपा से आप मकान बनवाना चाहते हैं। वास्तुशांति के लिए सत्यनारायण की शरण लेनी पड़ती है तुम्हे। लोभ, लालच और भौतिक सुखो के पीछे वीतराग दर्शन को भी दाव पर लगा दिया है आपने। जैन कुल मे जन्म लिया है आपने। वर्षो मे महान् आचार्यो की देशना सुनते आ रहे हैं आप! क्या परिणाम निकला? कहा है आपकी आस्था? कितनी उथली, थोथी और नकली हो गयी है। उसका भी आपको भान नही, अहसास नही।

देखें अपने घर की ओर

इसीलिए कहता हू कि आप अपने घर की तरफ नही, पराये घर की तरफ देख रहे है। वीतराग दर्शन हमारा दर्शन है। उसकी उपेक्षा कर हम पराये घर—पराये दर्शन पर आस्था रखते वहे जा रहे हैं। आप चाहते हैं शांति और आनन्द। लेकिन आपका व्यवहार और आचरण विरुद्ध दिशा मे आपको ले जा रहा है। पूर्व की तरफ जाना हो तो पश्चिम के रास्ते पर कदम रख कर कैसे पहुचोगे? वीतराग दर्शन और नवकार मन्त्र हमे वपौती मे मिले हैं। उस पूजी की उपेक्षा कर हम उसे व्यर्थ मे लुटा रहे है। आपकी स्थिति उस यात्री के समान है। एक यात्री जलगाव स्टेशन पर ट्रेन मे बैठा। ट्रेन भुसावल स्टेशन पर आयी। वह रोने लगा। कलकत्ता पहुंचे तब तक रोता रहा। कलकत्ते मे ट्रेन से उतरना जरूरी था। आखरी स्टेशन जो था। अन्य यात्रियो ने पूछा तो उसने बताया कि उसे बम्बई जाना था और ट्रेन थी कलकत्ता जाने वाली। अब रोऊ नही तो क्या करू? आप उस यात्री पर हस रहे हैं। यदि उसे भुसावल मे ही

कैसे निरर्थक वरवाद हो रहे हैं। आचाराग मे भी यही वात वताई गयी है।

पण्डित : एक परिभाषा

खण जाणाहि पण्डिए। 2–1–70

वही आत्मा पण्डित पद का धारक है, जो कि जीवन के शुभ अवसर के रहस्य जान लेता है। दुर्लभ और अमूल्य क्षणो को पहचानता है, भोगो और विषयो मे आसक्त न होते हुए, साधना मे लीन हो जाता है।

एक ग्रामीण को लाख रुपयो का हीरा मिला। वेचारे को उसका उपयोग और मूल्य मालूम नही। उस पत्थर को चटनी पीसने के काम मे लेता रहा। हम उस ग्रामीण के माफिक न वनें। हमे हीरे के समान यह जीवन मिला है। हम भी इसे चटनी वाटने के काम मे नही लगा रहे हैं? उस हीरे को अधिक चमकाये, प्रकाशमान करे और इसका मूल्य वढाये।

जैन दर्शन के सकेतो को ग्रहण करे। जैन दर्शन पर दृढ आस्था रखे। नवकार मत्र हमारी आधार शिला है। उसकी शक्ति, प्रभाव और उपासना पर मनन करे, चिन्तन करें, आचरण करें। इसी मे हमारी आत्मा का कल्याण है।

आपके जीवन के क्षण सार्थक वने, इन्ही मगल कामनाओ के साथ—

घूलिया
29 अप्रेल, 84

गीत की पंक्तियों मे स्वय के चैतन्य को सम्बोधित किया गया है। जागरण का सम्बोधन दो प्रकार का होता है। एक सम्बोधन मे हम अपने से भिन्न किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते है। इस सम्बोधन को हम पर उपदेश कहते हैं।

सम्बोधन–स्वयं को :

लेकिन दूसरा सम्बोधन है जो स्वय के प्रति होता है–जिसमे स्वय को सम्बोधित किया जाता है। आज अधिकाशतया पर सम्बोधन के प्रति हम सक्रिय है, सजग हैं, स्व सम्बोधन के प्रति हमारा लक्ष्य केन्द्रित नही होता, जिसे हम नीतिकारो की भाषा मे कहते हैं—"परोपदेशे पाडित्य"। यह सब पर सम्बोधन के अन्तर्गत है। हमारा अभ्यास दूसरे को जगाने का हो गया है। हम प्रयास करते हैं दूसरे को जगाने का। हम दूसरे को आवाज देने का प्रयास करते हैं। लेकिन स्वय को जगाने का, स्वय को समझाने का, स्वय को आवाज देने का प्रयास हमारा नही बन पाता है और इस स्थिति मे हम साधना नही कर सकते। साधना का मूल है—हमारी समस्त विचारणाएँ पूर्णतया स्वय पर केन्द्रित हो। वहा हम पर भाव को विस्मृत कर जाये। अच्छा और बुरा जो कुछ चिन्तन हो, वह स्वभाव का चिंतन हो, अपना ही चिंतन हो। लेकिन ऐसा प्राय होता नही है। हमारा अधिकाश चिन्तन पर सापेक्ष है, पर भावो पर केन्द्रित है और इस कारण हम साधना मे प्रवेश नही कर पा रहे है। हम आज प्राय. साधना का बाह्य रूप ले कर चल रहे हैं। सामायिक करना है, पौषध, व्रत, उपवास करना है। साधना का जो-जो रूप बाहर मे दिखाई दे रहा है, वह सब क्रियात्मक रूप साधना

की दशा को कहते हैं एक आरोपित दशा, जो बाहर मे आगन्तुक दशा है।

कल्पना करिये कि आपने एक टेरिलिन का शर्ट पहना है, नया शर्ट है, साफ सुथरा है, अभी प्रेस होकर आया है। उसको पहन कर आप बाहर निकले। वह स्वच्छ था, निर्मल था, लेकिन उस शर्ट के ऊपर पान की पीक गिर गई या कोई काला दाग लग गया। ऐसी स्थिति मे आपको वह शर्ट कैसा लगेगा ? आप जब शर्ट को पहन कर बाहर निकलते हैं। लोग उसको देख रहे हैं कि आपके नये शर्ट पर पान का पीक लगा हुआ है या काला दाग लगा हुआ है, आपको भी बडा अटपटा लगेगा। सामने देखने वालो को भी अटपटा लगेगा। आपको शर्ट पर बाहर से आगन्तुक दाग सहन नही होता, बर्दाश्त नही होगा। आप प्रयास करेंगे कि तुरन्त घर लौटा जाय और शर्ट बदल कर धोबी को दे दिया जाय। वह दाग निकाले।

मन के दाग :

जरा इस पर आध्यात्मिक चिन्तन करें। इस आत्मा पर, इस मन पर कितने दाग लग रहे हैं, कितने विभाव के दाग इस पर लगे हुए है, क्या उनको साफ करने का प्रयास होता है ? हम प्रयास करते हैं उन दागो को मिटाने के लिए जो बाहर कमीज पर लग गये है, चेहरे पर लग गये हैं, उन्हे जल्दी साफ करेंगे। लेकिन अनन्त काल से, अनादि काल से राग-द्वेष का काला धब्बा, विभाव की वृत्तियो के दाग इस आत्मा पर लगे हुये है, छाये हुये हैं, हम उन दागो को साफ करने का प्रयास नहीं कर पा रहे है। इन दागो को साफ

मनसा कल्पते वध, मोक्षस्ते नैव कल्पते ।

जैन दर्शन और मनोविज्ञान :

मन से ही वन्धन की कल्पना होती है, मन मे ही वन्धन-मुक्ति की कल्पना होती है, मन ही है, जो हमे ससार मे वांध देता है और वह मन ही है, जो हमे मुक्ति की ओर ले जाता है । इस वात को आप अच्छी तरह समझ ले कि नरक मे कौन व्यक्ति जा सकता है ? कौन सी गति का जीव जा सकता है ? और कितनी इन्द्रियो वाला जीव जा सकता है ? नरक मे जाने वाला जीव कौन सा है ? किससे पूछू कोई है जानकारी वाला ? जीव के जो 14 भेद हैं उन 14 भेदो मे से नरक मे जाने वाले कौन से भेद हैं ? थोडी तत्त्व चर्चा भी साथ मे हो रही है। सभी पचेन्द्रिय जीव, प्रथम नरक को छोड़ कर मुख्य तौर पर जिस जीव के मन है वही नरक योग्य कर्म वन्धन कर सकता है । इसके विपरीत मोक्ष जाने वाले कौन मे जीव हो सकते हैं ? मोक्ष की साधना भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है । जिस मे मन की शक्ति विद्यमान है वही मुक्ति की साधना कर सकता है । तो हमारी साधना का मूल स्रोत मन है और साधना की विपरीत दशा मे ले जाने वाला भी मन है । आश्रव का प्रमुख द्वार मन है और मुक्ति का प्रमुख साधन भी मन है । इस रूप मे मन को केन्द्रित करके सारी साधना चल रही है । मन को केन्द्रित करने का अर्थ है मन सम्वन्धी ज्ञान को प्रगट करना । इसका चिन्तन कहलाता है मनोविज्ञान । आधुनिक मनोविज्ञान मे इसे सामान्य मनोविज्ञान—असामान्य मनोविज्ञान कहते हैं। और इससे ऊपर परा मनोविज्ञान है । सामान्य मनोविज्ञान

मनसा कल्पते वध, मोक्षस्ते नैव कल्पते ।

जैन दर्शन और मनोविज्ञान :

मन से ही वन्धन की कल्पना होती है, मन से वन्धन-मुक्ति की कल्पना होती है, मन ही है, जो हमे स
मे वाँध देता है और वह मन ही है, जो हमे मुक्ति की
ले जाता है । इस वात को आप अच्छी तरह समझ लें
नरक मे कौन व्यक्ति जा सकता है ? कौन सी गति का
जा सकता है ? और कितनी इन्द्रियो वाला जीव जा सक
है ? नरक मे जाने वाला जीव कौन सा है ? किससे
कोई है जानकारी वाला ? जीव के जो 14 भेद है उन
भेदो मे से नरक मे जाने वाले कौन से भेद है ? थोडी त
चर्चा भी साथ मे हो रही है । सभी पचेन्द्रिय जीव, प्र
नरक को छोड कर मुख्य तौर पर जिस जीव के मन है व
नरक योग्य कर्म वन्धन कर सकता है । इसके विपरीत मो
जाने वाले कौन से जीव हो सकते हैं ? मोक्ष की साधना
मन वाला प्राणी ही कर सकता है । जिस मे मन की शा
विद्यमान है वही मुक्ति की सावना कर सकता है । तो हमा
सावना का मूल स्रोत मन है और साधना की विपरीत द
मे ले जाने वाला भी मन है । आश्रव का प्रमुख द्वार मन
और मुक्ति का प्रमुख सावन भी मन है । इस रूप मे मन
केन्द्रित करके सारी साधना चल रही है । मन को केन्द्रि
करने का अर्थ है मन सम्बन्धी ज्ञान को प्रगट करना । इसक
चिन्तन कहलाता है मनोविज्ञान । आधुनिक मनोविज्ञान
इसे सामान्य मनोविज्ञान—असामान्य मनोविज्ञान कहते हैं
, उसने ऊपर परा मनोविज्ञान है । सामान्य मनोविज्ञ

कितना अच्छा बन सकता है । उसके मन की कल्पना से वनस्पति मे प्रक्रिया होगी, उसको कष्ट होगा । कितनी सूक्ष्मता से विचार दिये हैं कि वनस्पति को काटने का भी विचार न करे । केलिफोरनिया के विलक्षण सन्त लूथर बरबेक ने भी वनस्पति पर गहरे प्रयोग किये है । वे वनस्पति से इतना प्यार करते हैं कि उनके बगीचे मे दिन मे कुमुदिनी खिलती है । सामान्यतया कुमुदिनी चन्द्रमा के प्रकाश मे खिलती है, दिन मे नही खिल सकती, वह उनके बगीचे मे दिन मे खिलती है । जो अखरोट का पेड 33 वर्ष मे फल देता है वह वहाँ पर कुछ वर्ष मे ही फल देने लगता है । ऐसे ही प्रयोग महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जिले के सरदार अजीतसिंह के यहाँ देखे गये हैं । वे प्रयोग करते है और जिस मौसम मे चाहो जैसा फल तैयार मिल जाता है । तो वनस्पति पर हमारे विचारो का प्रभाव पडता है । यह मनोविज्ञान भी मान रहा है । वैज्ञानिक इसमे और आगे बढ रहे है ।

मनोविज्ञान का असर केवल वनस्पति पर ही पडता है ऐसी बात नही है । मन की भावना की ऊँचाई पर पहुँचने वाले महापुरुष कहे गये है । इसका सहज अर्थ इतना निकालें कि हमारे मन की विभिन्न अवस्थाएँ है उनमे से एक अवस्था है जिसको जाग्रत मन अथवा जाग्रत अवस्था कहते है । दूसरी अवस्था सुसुप्त है जिसे आज की भाषा मे चेतन मन और अचेतन मन कहा जाता है । उदाहरण के तौर पर आपने कोई स्वप्न देखा जो कि इस जीवन मे सम्भव न हो । स्वप्न मे आप किसी शेर से कुश्ती लड रहे है, आकाश मे उड रहे है, हाथों को हिलाते हुए चले जा रहे है, आदि । क्या इस जीवन मे ऐसा कर सकते है ? लेकिन स्वप्न देखने वालो के

पडती है। उससे अधिक बेइन्द्रिय से तेइन्द्रिय मे जाने के लिए और उससे आगे पचेंद्रिय मे जाने के लिए अनन्त पुण्य सचित करना पडता है। मनुष्य जीवन और भी अधिक शक्ति बटोरने के बाद अनन्त पुण्यवानी से मिला। लेकिन इस शक्ति का प्रयोग किस दिशा मे कर रहे है, यह विचारणीय प्रश्न है। मन की गति का दुरुपयोग हो रहा है या सदुपयोग हो रहा है? यदि इसको सही दिशा मे लगाते रहे तो चमत्कार प्राप्त हो सकता है। मन के द्वारा क्रूर से क्रूर प्राणी के मन को बदल सकते है। सामने वाला व्यक्ति कितना ही हमारे प्रति द्वेष की भावना रखता हो, लेकिन हमारे मन की गति का उपयोग सम्यग् दृष्टि जैसा हो रहा है तो क्रूर से क्रूर प्राणी को भी मुडना पडेगा। एक घटना आपके समक्ष रख रहा हूँ।

पशु चिकित्सक का प्रेम और "रजिया" का समर्पण :

एक सरकस कम्पनी मे धनजयप्रसाद नाम के पशु चिकित्सक थे। वे बडा प्रयोग करते थे। एक बार प्रसग ऐसा बना कि एक शेरनी उस सरकस कम्पनी मे आई। रजिया जिसका नाम था। वह शेरनी जब कभी डा० धनजयप्रसाद को देखती तो गुर्राकर सामने आती। डा धनजयप्रसाद सोचने लगे कि इतने लोगो को देखकर यह शेरनी गुर्राती नही है, मुझे देखकर क्यो गुर्राती है? उन्होने अध्ययन किया, खोज मे लगे, तो पता लगा कि शेरनी को पिजरे मे बन्द करने वाले व्यक्ति की शक्ल डाक्टर धनजय की शक्ल मे मिलती-जुलती सी लगती है। यह शेरनी जब डाक्टर को देखती है तो उसे लगता है कि यह व्यक्ति मुझे बन्धन मे डालने वाला

थी, प्रसव नहीं हो रहा था। शेरनी ने समझ लिया कि यह व्यक्ति उपचार करने आया है। शेरनी ने दोनों पंजे ऊपर किये और डाक्टर के कंधे पर रख दिये। लोग देख रहे थे कि डाक्टर ने उसका मुंह सहलाया और धीरे से नीचे रखा और धीरे-धीरे उसके पेट पर मालिश की। थोड़ी देर तक मालिश करने के बाद प्रसव हुआ। पहला बच्चा मरा हुआ निकला। पीछे दो बच्चे जीवित हुए। जो बच्चा मरा हुआ निकला उसी के कारण छटपटाहट हो रही थी। डाक्टर ने उपचार किया सब कुछ ठीक हो गया। अब डाक्टर साहब और शेरनी में इतना प्रेम हो गया कि शेरनी को चाहे जब बाहर ले आवे, किसी बच्चे को शेरनी पर बैठा देवे, फिर भी शेरनी गुर्राती नहीं थी। शायद उसने सोच लिया कि इसने इसके प्राण बचाये हैं, इसलिए वह इनके उपकार से दब गई।

शेर क्रूरतम प्राणी कहलाता है, लेकिन उसमें कितनी दया रहती है। शास्त्रीय दृष्टि में शेर इतना क्रूर नहीं है, जितना इंसान है। शेर मर कर अधिक से अधिक कौनसी नरक तक जा सकता है? शेर अधिक से अधिक चौथी नरक तक जा सकता है जब कि मनुष्य सातवीं नरक तक जा सकता है, तब शेर ज्यादा क्रूर है या इंसान? यह आपको विचार करना है। आप समझते हैं कि शेर, चीता ज्यादा क्रूर हैं, इनको मार देना चाहिए। किन्तु शास्त्रकार कहते हैं कि शेर से ज्यादा क्रूर मनुष्य है और मनुष्य में शेर से ज्यादा जहर है। मनुष्य स्वार्थी प्राणी बन गया है। वह दूसरों को खत्म करने में देर नहीं करता।

मैं कह रहा था कि शेर जैसे क्रूर प्राणी में कितनी आत्मीयता है। शेरनी अब खुले रूप में बाहर आने लगी

भालू पर हमला बोल दिया और उसको चीर दिया। उसको काबू मे लाने के लिए अस्त्र से उस पर हमला किया और उसका जबड़ा छिन गया, उसका उपचार करना पडा। डाक्टर उसके पिजरे मे जाना चाहते हैं और देखते हैं कि इस शेर के जबडे मे टाके लगाने पडेगे। इतने समय तक इसे बेहोश रखना पडेगा इसलिए उस शेर को एक छोटे पिजरे मे लिया और बेहोशी का इजेक्शन लगाया। वह बेहोश हो गया। उसके बाद डाक्टर साहब उस शेर के पिजरे मे टाका लगाने के लिए जाने लगे तब फिर लोगो ने मना किया कि यह क्रूर प्राणी है, आप इसके पिजरे मे मत जाइये लेकिन डाक्टर ने कहा कि मेरा कर्तव्य है। डाक्टर रजिया शेरनी को साथ लेकर पिजरे मे चले गये। शेर बेहोश था, उसके टांके लगाये और पट्टी बाधी फिर सोचा कि इसके पजे पर भी पट्टी बांधनी पडेगी वरना टाको को खुरच देगा। वे पजे मे रूई लगा कर पट्टी बाध रहे थे, एक गाठ बाध चुके थे कि अचानक लाइट गुल हो गई। अधेरा हो गया था, टार्च मिला नही, इतने मे शेर को होश आ गया। वह खडा हुआ और डाक्टर पर झपटा। डाक्टर साहब के मस्तिष्क को अपने मुह मे लेकर दबाने वाला था कि वह शेरनी उनके पास मे खडी एकाएक झपटी और उसने उस शेर के जबडे पर धक्का दिया और उसको पीछे धकेल अपने दोनों पजे उसके सीने पर गाड दिये, वह शेर आगे नही बढ सका। उसके मुह मे गुर्राहट की आवाज आई। लोग बाहर खडे थे। आवाज सुनी तो लोगो ने सोचा कि डाक्टर साहब खतम हो जायेंगे, शेर को होश आ गया है। लेकिन थोडी देर मे लाइट आ गई और लोगो ने देखा कि डाक्टर साहब पिजरे के

जीवन वदलता नही, रूपान्तरण होता नही । जब तक रूपान्तरण नही आयेगा, जीवन वदलेगा नही तब तक बाहर के प्रयोग से कुछ नही होने वाला है । हम जीवन को परिवर्तित करे । ऐसे महान वक्ता का सान्निध्य मिला है, उनकी वाणी को जीवन मे उतार लें तो निश्चित हमारा जीवन आनन्द की ओर गतिशील होगा ।

क्षेत्रीय चिन्तन :

बम्बई के बोरीवली क्षेत्र मे धर्म जागरण हो रहा है । जागरण की दृष्टि से जागरण कहे तो नही लगता । आप अधिक से अधिक सवर करते हो, अधिक से अधिक सामायिक-दया, पौषध मे लगे । वह तो नही लगता जैसा छोटे-छोटे गावो मे लगता है क्योकि गाव वालो का जीवन इतना व्यस्त नही होता । बम्बई के जीवन मे बहुत व्यस्तता रहती है, मस्तिष्क मे इतना तनाव रहता है फिर भी छुट्टी के दिन आप लाभ ले सकते है । आचार्य भगवन का पदार्पण आपके यहा हुआ है । यदि आप उनके चरणो मे लाभ ले तो आपका मानसिक तनाव भी कम हो सकता है ।

तपस्या का जागरण सन्त-सतियो मे और भाई-बहिनो मे हो रहा है । महासती कस्तूर कवरजी के आज 35 की तपस्या है, श्वेताश्री महासतीजी के 31 का पारणा हुआ है । महासतीजी प्रिय लक्षणाजी के 21 की तपस्या चल रही है । अन्य सतियाजी के छोटी-मोटी तपस्या चल रही है । उधर घोर तपस्वी अमरचन्दजी महाराज साहब की भी तपस्या देखिये । उनके 26 की तपस्या मे 28 किलोमीटर का विहार हुआ है । उन्होने लगभग 450 किलोमीटर का

३

साधना हो निष्काम

जप ले प्रभु का नाम, मनवा बन जा तू निष्काम ।
पर की चिंता छोड़ दे, मनवा, क्यों होता हैरान,
अपनी ही चिंता कर ले तू, कर अपना ही ध्यान ।। मनवा ।।
काया माया बादल छाया, क्षण भर का है मुकाम,
सुन्दर महल-बगीचे सारे, साथ चले नही दाम ।। मनवा ।।
नाम प्रभु का सच्ची नौका, पल मे पार लगाय,
जिसने प्रभु नाम को छोड़ा, डूब बीच मे जाय ।। मनवा ।।
दुनिया के गोरखधन्धो मे, मिले कहा विश्राम,
आत्म ज्ञान सुधा रस पीले, पायेगा आराम ।। मनवा ।।
मात पिता सुत सुन्दर नारी का, करता तू ध्यान,
किन्तु साथ न देंगे कोई, जब होगा प्रस्थान ।। मनवा ।।
जगत मोहिनी मे मनवा तू, अब तो ले ले विराम,
अक्षय "शांति" पा लेगा तू, प्रभु चरण को थाम ।। मनवा ।।

सम्बोधन मन को :

गीतिका की इन पंक्तियों मे मन को सम्बोधित किया गया है। समस्त भारतीय दर्शनों ने, ऋषि मुनियों ने एव

समस्या है। मन को कैसे वश मे करे ? हम सामायिक कर रहे है। मन कही दौड रहा है। हम माला फेर रहे हैं। हमारा मन कही भटक रहा है। मन को एक जगह बाधना बड़ा मुश्किल है। इसका कारण भी है। मन का स्वभाव है—मनन करना। 'मन्यते अनेन तत् मन" जो मनन नही करता वह मन ही नही। जैसे अडियल घोडे की अपेक्षा तेज रफ्तार वाला घोडा ही अच्छा माना जाता है, ठीक इसी तरह अवरुद्ध मन की अपेक्षा अत्यन्त तेज रफ्तार वाला मन ही अच्छा है। मन को पवन की उपमा दी है। पवन क्षणभर के लिए रुक जाय तो प्रलय हो जाय। अत मन गतिशील ही होना चाहिए।

फिर मन को रोकने का मतलब क्या है ? मतलब इतना ही है कि मन को विपरीत दिशा मे से लौटा कर उसे सही दिशा दे दे। सही रास्ता सभला दे। अडियल घोडा रास्ता छोड देता है, तब उसकी लगाम खीचकर उसे सही रास्ते पर लाया जाता है। ठीक इसी तरह मन पर नियन्त्रण करना चाहिए। विषय विकारो की दिशा से मन को लौटा कर भावना की दिशा मे गतिशील करना है। भावना का उद्देश्य ही यह रहा है कि मन की गति को बदल दे और हमेशा उसे सही रास्ते पर रखें।

मन एक बालक

एक बालक के हाथ मे कुल्हाडी आ गयी। उसके पास शक्ति थी, ऊर्जा थी, कुछ करने के भाव थे, कुल्हाडी का उपयोग करना था। उसने घर के कीमती फर्नीचर को तोडना शुरू कर दिया। ऊधम मचा दिया। किसी बुद्धिमान बुजुर्ग ने उसे जलाऊ लकडियो का ढेर बताया। लकडी फाडने का

कटेंगे। अन्तराय कर्म क्षीण होने पर जो मिलना है, वह अपने आप मिलेगा ही। साधना का सौदा मत करना। अपनी साधना को भौतिक सुखो के लिए मिट्टी के मोल बेच मत देना। पूणिया श्रावक की एक सामायिक का मूल्य कोई नही आक सका। दुनिया भर की निधिया एक सामायिक की दलाली के लिए भी पर्याप्त नही थी। अत अपनी साधना से क्षुद्र पदार्थों की माग न करे। इस पर एक दृष्टात याद आ रहा है—

एक सम्पन्न व्यापारी था। व्यापार मे घाटा लगा। उसकी हालत बिगड गयी। गाव मे पहले जैसी प्रतिष्ठा नही रही। जिस गाव मे मान-सम्मान मिला उसी गाव मे उपेक्षित जीवन जीना उसके लिए दूभर हो गया। इधर उधर से उसने दो हजार रुपये उधार लिये और कमाई करने परदेश के लिए प्रस्थान किया। भ्रमण करते हुए वह एक समुद्र किनारे आया जहा उसे बडी भारी भीड़ दिखाई दी। भीड क्यो है यह जानने की उत्सुकता हुई और वह भी भीड मे शामिल हो गया। उसने देखा वहा कुछ गोताखोर थे। समुद्र मे एक गोता लगाने का वे ५०० रु लेते थे। समुद्र मे डुबकी लगाते, जो कुछ कंकर-पत्थर हाथ लग जाते, ऊपर ले आते और जिसने गोता लगाने के ५०० रु दिये थे, उसे दे देते। इन कंकरो मे कभी मणि, रत्न और मोती भी निकलते जो बहुत मूल्यवान भी होते थे। जौहरी वही बैठा रहता और कसौटी के आधार पर वह उन रत्नो का मूल्य आकता था।

उस व्यापारी को लगा क्या न अपना भी अपना भाग्य आजमा ले। उसने गोताखोरो को ५०० रु दिये। गोताखोर ने गोता लगाया। सिर्फ कंकर हाथ आये। दुबारा ५०० रु.

व्यापारी ने अपनी कथा और व्यथा जौहरी को सुनायी। उनके सामने मणि रखी और उसे बेचने की इच्छा प्रदर्शित की। वह जौहरी कुबेरपुत्र था, प्रामाणिक था। अच्छे सस्कार थे। साधर्मी भाइयो के लिए उसके हृदय मे दया थी, अनुकम्पा थी।

आज हम देखते है, ज्यो-ज्यो सम्पत्ति बढती है, साधर्मी—दीन, दु:खी भाइयो के प्रति उपेक्षा बढती है, घृणा के भाव बढते हैं। आज तो यह चित्र है।

माया से माया मिले, कर कर लम्बे हाथ।
तुलसीदास गरीब की, कोई न पूछे बात॥

भाइयो, दीन, दु:खी और गरीबो से आप दो शब्द मीठे ही बोल लेते है, तो वे अपने को कृतकृत्य समझ लेते है। उनके मन मे प्रसन्नता खिल उठती है। आप कार से जा रहे है। रास्ते मे कोई गरीब साधर्मी पैदल जाता दिखाई दे दिया और आपने कार रोक ली। उसे लिफ्ट दी। आपका नुकसान तो कुछ न हुआ, लेकिन वह राहगीर हमेशा-हमेशा के लिए आपका बन गया। किसी आदमी को अपने से जोडना हो तो हृदय मे अनुकम्पा अवश्य होनी चाहिए, वाणी मे मिश्री की मिठास होनी चाहिए।

जौहरी ने व्यापारी से कहा—भई, यह मणि यदि बेचना हो ना इसका मूल्य बता दो। जितना भी मूल्य मागोगे उतना तुम्हे मिल जायगा। व्यापारी को आश्चर्य हुआ। २५ क

उनको पता चलता। कोई लौटाने आता तो बोल देते थे ये सिक्के मेरे नही। तुम्हारे ही होगे। लेने वाले की प्रतिष्ठा मे आच न आये, उसे शर्मिन्दा न होना पडे, तीसरे कान पर खबर न पडे इसका पूरा ख्याल रखते थे। उन्हे न यश की अभिलाषा थी, न नाम के पीछे दौडते थे। मौन और प्रसिद्धिविमुख होकर दीन-दुखी भाइयो की वे हमेशा सहायता करते थे। किसी तरह यह बात पूज्य श्रीलाल जी म सा के कानो पर पहुची। उन्होने मालू जी से पूछा। आप तो बहुत लाभ कमा रहे है? मालू जी ने बताया—गुरुदेव! यह कचरा बढता ही बहुत है। मै जितना बाहर फेकने की कोशिश करता हू, उतना ही यह बढता जा रहा है। आप ही तो फरमाते हैं कि—

पानी बाढे नाव मे, घर मे बाढे दाम।
दोनो हाथ उलीचिये, यही सयानो काम ॥

सच है सुपात्र दान से सम्पत्ति बढती ही है।

आज हम दान करते है—हमारे नाम का सगमरमर का पत्थर लगे इसलिए। नाम और प्रसिद्धि के पीछे हम दौड रहे है। लेकिन हमारे काम ढग के नहीं। हम टाटा, बिडला बनना चाहते हैं। दुनिया की सारी सम्पत्ति बटोरना चाहते हैं। चाहे जितना धन इकट्ठा करें फिर भी हमे सतोष नही होता। कवि सुन्दरदास की कविता है—

जो दस-बीस, पचास भये, शत होय हजारन, लाख मगेगी।
कोटि अरब, खरब भये, धरापति होने की चाह जगेगी।
स्वर्ग पाताल को राज मिले, तृष्णा अधिकी अति आग लगेगी,
"सुन्दर" एक सतोष बिना शठ, तेरी तो भूख कभी न भगेगी।

वरदान दो जिससे मैं सारी पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर सकूं। महात्मा ने पूछा "पृथ्वी पर विजय प्राप्त हो जाने के बाद क्या करोगे ?" सिकन्दर ने जवाब दिया—तब तो चैन की नींद सो सकूंगा। महात्मा ने समझाया। फिर अभी क्यों नही सो जाते, जैसे मैं चैन की नींद सोता हूं ? बात सिकन्दर के पल्ले नही पडी। महात्मा अन्दर गये। अन्दर से एक मानवी खोपडी लाये और सिकन्दर को देते हुए कहा—"इस खोपडी को अनाज से भर दो। फिर सैन्य लेकर देश-देशान्तर को प्रस्थान करो। तुम्हारी फतह होगी।" इतनी सी बात। सिकन्दर ने लाख कोशिश की। सारे देश का अनाज मगवाया, लेकिन खोपडी अनाज से नही भरी। खाली की खाली ही रही। क्योकि वह मानव की खोपडी जो थी। मानव की तृष्णा का कभी अन्त नही हो सकता।

इधर व्यापारी ने जौहरी से सवा लाख तो ले लिए लेकिन मन मे शका उठी कि जौहरी ने मुझ पर उपकार स्वरूप तो नही दिये। हिम्मत कर उसने जौहरी से पूछा—"सेठ जी, मैंने मूल्य तो आप से लिया है लेकिन सही-सही बताइये क्या इस मणि का इतना मूल्य है ?"

जौहरी ने कहा—"भाई, यह मणि नौ करोड रुपये मूल्य की है। तभी तो मैं तुमसे कह रहा था कि चाहे जितना माग लो।

व्यापारी अब पछता रहा है। क्यो मैंने अपने मुह से इतना मूल्य मागा। यदि मैं जौहरी पर ही छोड देता कि आप उचित समझें उतना दे दो। तो सभव है मुझे पाच करोड रुपये अवश्य मिल जाते।

इसीलिए मन पर नियन्त्रण करो। मन पर नियन्त्रण पा लिया तो साधना भी आसान बन जायगी। गीता मे श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा—

> असशय महाबाहो मनो दुर्निग्रह चलम्
> अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ११६—३५

नि सदेह मन चचल है और कठिनता से वश मे होने वाला है। परन्तु अभ्यास—बार-बार यत्न करने मे और वैराग्य से वश मे हो जाता है।

तृष्णा के पीछे दौडोगे तो उतने ही तृष्णा के जाल मे फसते जाओगे, तृष्णा बढती ही जायेगी। तृष्णा समाप्त होने पर ही आसक्ति टूटेगी और कदम साधना के मार्ग पर अग्रसर होगे। दो रुपये का ताला उस तिजोरी का रक्षण करता है जिसमे लाखो की सम्पत्ति भरी पडी है। आपका छोटा-सा सुपात्र दान आपकी सम्पत्ति मे वृद्धि करने वाला बन सकता है। दान रूपी ताला दया, अनुकम्पा एव मानवता के भण्डार का रक्षण कर सकेगा।

सम्यक् साधना मनुष्य योनि मे नही करोगे तो कब करोगे ? क्या पशु योनि मे करोगे ? क्या नर्क योनि मे करोगे ? या देव योनि मे करोगे ? अरे ! देव योनि मे साधना सभव नही। यह मानव जन्म मिला है। सुस्ती उडाओ। जागृत बनो। पुरुषार्थ पूर्वक निष्काम भाव से साधना के मार्ग पर अपने दृढ कदम बढाओगे तो आपका जीवन सफल होगा।

धुलिया, २५ अप्रेल, ८४

—□—

यह देखेंगे कि कर्मबंध क्यो होता है। मन की वृत्तियो का इसमे क्या स्थान है।

कर्म बंध के कारण :

आचार्य उमास्वाती जी ने 'तत्त्वार्थ सूत्र' मे बताया है कि 'मिथ्या दर्शनाविरति प्रमाद कषाययोगा बंध हेतव ।' अर्थात् कर्मबंध के पाच हेतु हैं, कारण हैं, निमित्त है। १ मिथ्यात्व २ अविरति। ३ प्रमाद। ४. कषाय और ५ योग। इन पाच कारणो से ही कर्मो का बंध आत्मा के साथ होता है। इनके क्रम मे भी एक विशेषता है। मिथ्यात्व को प्रथम क्रमाक पर रखा है। अविरति दूसरे क्रमाक पर है। यदि इन्हे ठीक से समझने के लिए इन क्रमाको को एक के आगे एक इस ढग से रखे तो १ २ ३ ४ ५ यह सख्या बन जायेगी।

मिथ्यात्व पहले क्रमाक पर है इसका मतलब कर्म बंध का मूल और प्रभावी कारण मिथ्यात्व ही है। मिथ्यात्व को जीवन से हटाया तो शेष कारणो की शक्ति घट जायगी। १ २ ३ ४ ५ इस सख्या मे से मिथ्यात्व का क्रमाक यदि निकाल दिया जाय तो सख्या २ ३ ४ ५ बचेगी। प्रथम क्रमाक मिथ्यात्व नष्ट होते ही १० हजार गुणा कर्मबंध नष्ट हो जायेंगे।

आगे चल कर यदि हमने व्रत नियम अगीकार कर लिए, अविरति को नष्ट कर दिया तो अविरति का २ क्रमाक नष्ट हो जायगा। और सिर्फ ३ ४ ५ सख्या बचेगी। इस तरह हम कर्मबंध का एक-एक कारण पूर्वापर नष्ट करते रहेंगे तो हमारे कर्मबंधो की तीव्रता बडे भारी अनुपात मे कम होती चली जायगी। इसलिए मिथ्यात्व को कर्मबंध का मूल कारण

मे झाक कर देखा है ? यदि हम अतरग मे झाकेंगे तो हमे दिखायी देगा, हम अधिकाशतया दुष्प्रवृत्तियो में वहे जा रहे हैं। हमारी आत्मा मलिन वनी हुई है। कषायो से हम लिप्त है। हमे सावधान होना है और इससे मुक्ति पानी है। कोई आदमी रुग्ण है, लेकिन जव तक उसे स्वय को वोध न हो कि मैं रुग्ण हू, वह वीमारी से मुक्ति पाने का प्रयास कैसे कर सकेगा ?

यही हालत आज हमारी है। हमारे जीवन की स्थिति विपरीत वनी हुई है। हमारी आत्मा मे रोग हो रहा है। इस रोग से मुक्त होने की तत्परता-उल्लास हम मे दिखाई नही देता। रोग मुक्ति के भाव ही पैदा नही हो रहे हैं। यदि हो भी रहे हो तो भी हमारे उपाय विपरीत, उलटे ही हो रहे हैं और वीमारी दुरुस्त होने की अपेक्षा वढ रही है।

चार पुरुषार्थ बनाम चार दवा की पुड़िया :

एक देहाती को तेज वुखार हो आया। इलाज के लिए वह वैद्य के पास पहुचा। वैद्य ने उसे चार पुडिया दी। दो पुडिया अनुपान के साथ खाने को कही और दो पुडिया तेल मे मिला कर वदन पर लेप करने के लिए कहा। देहाती घर आया। दो पुडिया खाली। दो पुडियो का वदन पर लेप कर लिया। थोडी देर मे ही उसकी वेदना तीव्र हो गयी। वेदना के मारे वह छटपटाने लगा। वैद्य को वुलाया गया। वैद्य ने जाच की, आसार देखे और जान लिया कि इस देहाती ने वाह्य उपचार यानी लेप के लिए दी हुई दवाओ को तो खा लिया है और खाने की जो दवाई थी उसने लेप कर लिया है। ऐसी

क्या बीतेगी ? आपके भाव कैसे होंगे ? आपको गुस्सा तो नहीं आयेगा ? उत्कट भावों में आपने खीर वहराई, उसे नाली में फेंकते देख आपको और वहराने का उत्साह रहेगा ? क्या यही विचार सतों का भी नहीं होता होगा ?

सतों के द्वारा वीतराग वाणी आपको सहज रूप में मिल रही है। यथाशक्ति उसे स्वादिष्ट और सुगम बना कर वह वाणी हम प्रवचनों के द्वारा आपके पात्र में वहराते हैं। लेकिन बड़ा खेद होता है कि यह वीतराग वाणी की खीर आप तो नाली तक (स्थानक के बाहर तक) भी नहीं ले जाते हैं। जहा बैठे हैं वहीं छोड कर उठ खडे हो जाते हैं। हम शुद्ध भावना से आपको प्रवचन सुनाते हैं। लाऊडस्पीकर का उपयोग नहीं करते। गला फाड़कर बोलते हैं। लेकिन उस प्रवचन को जीवन मे उतारने की बजाय आप यही छोड जाते है, तो फिर हम अपनी शक्ति, अपना समय इसमें फिजूल क्यों बरबाद करें ? इतना समय अपनी आत्म भावना मे लगा दे तो हमारा मार्ग जल्दी प्रशस्त हो सकता है। किन्तु ध्यान रहे। धार्मिक प्रवचन देने वाले वक्ता की तो एकात निर्जरा निश्चित ही होती है। लेकिन श्रोता की निर्जरा भजना से होती है। निर्जरा होगी या नहीं भी होगी, यह श्रोता के अध्यवसायों पर निर्भर है।

तनाव रहित जीवन ही शान्ति से भर सकता है। आपके जीवन मे पारिवारिक, आर्थिक आदि कई प्रकार के तनाव है, संघर्ष है। इन संघर्षों की शृंखला निरन्तर बढती जा रही है। और यह सब हो रहा है सस्कारों के अभाव के कारण। हम पर अच्छे सस्कार नहीं। हमारे बच्चों पर धार्मिक सस्कार

शिष्य को बुलाया गया। शिष्य और पुत्र-वधू के बीच जो वार्तालाप हुआ उसका कथन कर सेठ ने उसका मतलब पूछा। शिष्य ने कहा, "गुरुदेव! सेठ जी की पुत्र-वधू बहुत ही विचक्षणा है, विदुषी है। मेरे बदन पर के वस्त्र देख कर उसने जाना कि मैं नव दीक्षित हू और अल्पवयी हू। अत उसने कहा—अब सवेरा है। यह सवेरा यानी मेरे जीवन का सवेरा यानी सिर्फ शुरूआत है। यही भाव उसका था। अभी तो जीवन का मध्याह्न, सायकाल होना है। आपने इस उषाकाल मे ही सयम क्यो स्वीकार कर लिया? मैंने कहा कि बहिन, मैंने काल को नही जाना है। न जाने किस क्षण काल आ जाए कोई विश्वास नही। अत. जितनी शीघ्र साधना की जाय, कर लेनी चाहिए।

मैंने सहज ही प्रतिप्रश्न कर लिया—तुम्हारे घर का आचार क्या है। इस प्रश्न का उत्तर उसने दिया कि मेरे घर बासी जीमन होता है। इसका मतलब था कि पूर्वभवो की पुण्याई अभी तक उसके घर मे काम आ रही है और इस भव मे कोई नया धर्माराधन नही हो रहा है। इस भव मे धर्माराधन होता तो वह ताजा भोजन कहलाता। उम्र पूछने पर उसने हरेक की जो उम्र बतलाई वह आध्यात्मिक साधना की उम्र बताई। सेठ जी पालने मे झूल रहे है। इसका मतलब था कि अभी सेठ जी ने धर्माराधना की शुरुआत भी नही की है। पति ८ वर्ष से धर्माराधन करने लगा है और बच्चे मे तो उसने जन्म से ही अच्छे सस्कार दिये है अत वह १२ वर्ष का है। सेठ जी का समाधान हुआ। उन्हे अपनी पुत्र-वधू की चातुरी और धार्मिक लगन से खुशी भी हुई और उन्होंने धार्मिक जीवन जीने का सकल्प भी कर लिया।

वडे ओहदे पर अफसर थे। सरकारी काम से महानगरी जाना था। आप जानते हैं कि वडे शहरो की होटलो मे भी जगह आसानी मे नही मिलती। उन्होंने एक होटल मालिक को पत्र लिखा कि अमुक दिन वे उस महानगरी मे आ रहे हैं। उनके साथ उनका कुत्ता भी रहेगा। उनके लिए एक कमरा रिजर्व रखें।

होटल मैनेजर ने जवाब दिया—आज तक हमारी होटल मे किसी कुत्ते ने कभी शराव नही पी, कोई उधम नही मचाया। इसलिए आपका कुत्ता आ सकता है। और यदि आपका कुत्ता प्रमाण-पत्र दे दे कि आप भी शराव नही पीयेंगे। किसी पर-स्त्री को साथ न लायेंगे तो आप भी आ सकते है। यह है आज का हमारे समाज का दर्पण। कैसी मनोवृत्तिया वन रही हैं—आज के इन्सान की।

दशहरे के दिन अन्य लोग रावण की प्रतिमा जलाते है। क्योंकि रावण ने सीता का अपहरण किया था। रावण के भी कुछ व्रत थे, नियम थे। उनका व्रत था कि जो स्त्री उसे स्वीकार न करले तव तक वह उस स्त्री को स्पर्श नही करेगा। इसी कारण तो सीता निष्कलंक रह सकी। हम रावण की प्रतिमा जलाये जा रहे है। लेकिन आज तो चारो तरफ हजारो महारावण पैदा हो गये हैं। अखवार खोलो। प्राय. प्रतिदिन समाचार मिलेंगे—नन्ही कली पर वलात्कार हुआ। अत्याचार, व्यभिचार, वलात्कार से कॉलम भरे पडे है। और वलात्कार करने वालो मे कभी पुलिस भी है, समाजसेवक भी है, नेता भी है और दादा लोग भी है। इन महारावणो के वीच हम अपना जीवन जी रहे है। रक्षक ही भक्षक वन रहे है। आज के

झलक रहा था। गुरु नानक से बोले—मुझे कुछ सेवा का मौका दें। नानक जी ने कहा—"भाई, तुम जैसा गरीब तो मैंने अभी तक नहीं देखा।" सेठ के अहंकार को चोट लगी। उन्होंने अपनी सम्पत्ति और ऐश्वर्य का बखान किया। गुरु नानक ने उसे एक छोटी-सी सीने की सूई देते हुए कहा कि "यह ले जाओ और मुझे अगले जन्म में यह वापस कर देना। इतनी-सी सेवा कर दो। फिर कभी कोई काम दूंगा।"

सेठ जी घर गये। सभी दोस्त, स्वकीय और पंडितों से मशविरा किया। ऐसा कोई तरीका ईजाद करो कि सूई अगले जन्म में साथ ले जा सकूं। सभी लोगों ने हाथ झटक दिये और कहा कि सूई साथ नहीं जा सकती। एक बुद्धिमान मित्र ने सलाह दी। अच्छा तो यही है कि अभी जाकर गुरु नानक की अमानत लौटा दो। कहीं रात में मर गये तो कर्जा रह जायगा। अगले जन्म में गुरुदेव ने सूई मांग ली तो कहां से दोगे?

सेठ जी को अपनी भूल नजर आई। रात में ही नानक के पास गये। चरण पकड़े, सूई लौटाई और क्षमा मांगी। नानक ने समझाया—तुम इतना छोटा सा भी काम नहीं कर सकते और अपनी करोड़ों की सम्पत्ति पर इतना इठलाते हो। सेवा का मौका पूछ रहे हो। यह सारा संसार दुःखों से भरा पड़ा है। कदम-कदम पर असहाय रुग्ण, दीन, दुःखी मानवों की और अन्य जीवों की आर्त्त पुकार सुनाई दे रही है। सेवा के हजार मौके आपके सामने प्रस्तुत हैं। चाहिए सिर्फ आपके कान खुले, और आंखें खुली, हर कदम पर आपको सेवा का मौका नजर आयेगा।

५

सामायिक साधना-आत्म-आराधना

हम अध्यात्म मार्ग के पथिक हैं। अत. साधना के लिये आत्मा का स्वरूप जान लेना आवश्यक है। हमारी आत्मा आज कैसी है और उसे कैसी होनी चाहिये इस पर मनन करना आवश्यक है। इस मनन पर प्रकाश डालने वाला एक गीत है—

म्हारी पावन आतम चादर या कुण मैली करग्यो रे,
करग्यो करग्यो करग्यो रे दागासूं भरग्यो रे ॥ म्हारी ॥

शाश्वत सुख री सत्ता वाली, सिद्ध स्वरूपी पाई,
साफ सूथरी दाग विना री, धोली फट उजलाई।
कुण या काली करग्यो रे ॥ म्हारी ॥

काल अनादि सू इण रे पर, करमा री गथ लागी,
दूध वारि जिम आपस मे मिल, वण री है या दागी।
दाग यो गहरो चढग्यो रे ॥ म्हारी ॥

आतरिक शर्ट की सफाई :

आप टेरेलिन की एक सफेद शर्ट पहन कर वाहर निकलते हैं। रास्ते मे उस पर पान की पीक पड जाती है या काला दाग लग जाता है। उस वक्त आप वेचैन हो जाते है। लोग क्या कहेंगे, इस विचार से ही आपकी बेचैनी बढती है। आपको अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल आता है। आप तुरन्त घर आकर शर्ट वदल लेते हैं। शर्ट पर आपको एक दाग भी वरदाश्त नही होता। तत्काल आप सफाई चाहते है।

ज्ञानी जन पूछते हैं "आपकी आत्मा पर कितने दाग लगे हैं?" कभी सकल्प पैदा हुआ कि उनकी भी सफाई करे? उल्टे आप दाग वटाये जा रहे है। हम ससार मे निष्कलक चले आये थे। अपने-पराये का भेद भी नही समझते थे। वालक निष्पाप होता है। अपना-पराया नही जानता। हम उसे सस्कार देते हैं। ये तेरे मम्मी पापा है। ये उसके मम्मी पापा है। ये तेरा खिलौना है। ये दूसरे का है। इस तरह अपने पराये के सस्कार उस पर आरोपित करने वाले हम हैं। वेदाग आते हैं। लेकिन जैसे वडे होते हैं वैसे हमारा जीवन राग-द्वेष मे भरता चला जाता है। साफ-सुथरी चादर गन्दी होती चली जाती है। आत्मा निरन्तर मलिन हो रही है। दाग गहरे होते जा रहे हैं। आपको वाहर की अस्वच्छता पसन्द नही। लेकिन भीतर की? आत्मा के भीतर कलुषता, राग-द्वेष, छल, कपट के धब्बे तो गहरे लगे हैं। आप सामायिक करते है। कभी आपने सोचा—जीवन का उद्देश्य क्या है? सामायिक साधना का उद्देश्य क्या है? या सिर्फ द्रव्य सामायिक कर आप परम्परा निभा रहे हैं और इसी मे धन्यता मान रहे है?

सिर्फ श्रवण हो। माला के वक्त सिर्फ माला पर आपका मन केन्द्रित हो। इसे ही सहजयोग कहा है।

आप श्रावक कहलाते हैं। श्रावक का अर्थ है श्रवण करने वाला। इसका विस्तृत अर्थ यो होगा—श्र-शृणोति सूत्र वाक्यानि, व-विवेकव्रत धारणम् क-करोति सदनुष्ठानानि, तद्विश्रावकमते। जो विवेक के साथ सुनकर निरन्तर अच्छे कर्म करता है वह श्रावक है।

सामायिक दो घड़ियो वाली :

एक पुरानी बात है। एक बुढिया अपने सामने दो रेत की घडिया लेकर बैठी सामायिक करने। उसे पूछा गया दो घडिया किस लिये। उसने जवाब दिया—मैंने इस घडी में एक और दूसरी से एक ऐसी दो सामायिक ली है। खैर इतना अज्ञान आज नही है। लेकिन असावधानी मे आज भी कोई फर्क नही आया। चार भाई इकट्ठे हो सामायिक लेंगे तो पूरे समय तक तेरी-मेरी करते रहेंगे। गाव का धोना सामायिक मे अपनी जबान से धोते रहेंगे। वह सारी गन्दगी आत्मा पर जमा हो जायगी। दो बहिनें सामायिक करेंगी तो सास, ननद, बहू, अडोसी-पडोसी बहिनो की निन्दा का सिलसिला शुरु हो जायेगा। एक गीत है :—

पाच सात मिल कर आयी, माला निन्दा की फेराई।
तुम ही कह दो मेरी बहिनो, यह कैसी है समाई॥
राजीबाई, रतनीबाई स्याणी सूढीबाई।
दोपहरी मे या सध्या मे स्थानक मे सब आई॥
अब बातो की झडी लगाई, कच्ची पक्की सुनी सुनाई।
तुम ही कह दो मेरी बहिनो, यह कैसी है समाई॥

ढ़ू —किसी ग्राम मे सम्पन्न पिता के दो लडके थे। घर मे प्रेम था, शाति थी। बहुओ मे भी स्नेह और प्रेम था। मरणासन्न अवस्था मे पिता ने लडको से प्रतिज्ञा करवाई कि वे कभी विभक्त नही होगे। पिता की मृत्यु हुई। सम्पत्ति और शाति मे, प्रेम मे भी वृद्धि होती रही। यह बात पडौसी को खटकी। गृह कलह मे उसके तीन तेरह हो गए थे। मेरे घर हर रोज कलह हो और पडौस मे चैन की वशी बजे यह उसे बरदाश्त नही हुआ। उसने छोटे भाई को बहकाया, कान भरे, पैसो की मदद का प्रलोभन दिया। यही नही उसे दस हजार रुपये का प्रलोभन देकर अलग व्यवसाय करने को राजी कर लिया। उसकी दुकान चलने लगी। एक दिन उस दुकान की चिट्ठी बडे भाई के हाथ मे आ गई। उसने बडे प्रेम से पूछा। छोटे ने कहा—मेरे दोस्त ने सहयोग दिया और मैने दुकान लगाई। इसमे आपका कोई हिस्सा नही है। आखिर उसने अलग हो जाने की बात की। बडे भाई ने छोटे भाई को बहुत समझाया, मिन्नते की, पिता के सामने की हुई प्रतिज्ञा का स्मरण दिलवाया। इसका भी असर न होता देख सब धन दौलत छोटे भाई को सौंप गृह त्याग करने की तैयारी दर्शाई और कहा मैं इस सम्पत्ति के दो भाग नही होने दूगा। यह सब वैभव तुम रखो, मैं तुम्हारे यहा नौकरी करके बच्चो का पालन कर लूगा। आखिर छोटे भाई का हृदय बदला। वह बडे भाई के चरणो मे गिर कर रोने लगा और पुन प्रेम की गगा बह गई। छल-कपट हमेशा प्रेम और शाति को खदेडना चाहते हैं ताकि उस जगह का कब्जा उन्हे मिले। ऐसे सैकडो किस्से हमारे आसपास प्रतिदिन होते हैं।

६

संकल्प शक्ति

अपनी आत्मा ही ईश्वर है। वह सर्व शक्ति सम्पन्न है। अनन्त आनन्द एव अनन्त शांति के स्रोत उसी मे प्रवाहित हो रहे हैं। किन्तु उसका वह ईश्वरत्व एव आनन्द आवृत है, अत आवश्यकता है प्रबलतम सकल्प शक्ति की, ताकि इस चैतन्य को विभाव के भटकाव से अन्तर की दिशा प्रदान की जा सके। इस सम्बन्ध मे एक गीत है।

बोल मन, अपनी जय जय बोल ।। टेर ।।
तू ही अपना शुद्ध है ईश्वर, तुझ मे बैठा है परमेश्वर
कर्ता धर्ता तू है महेश्वर, अन्तर चक्षु खोल ।। बोल ।।
कहा भटकता फिरता पगले, क्यो परता कचरे के ढगले
स्वय-स्वय का रूप तू लखले, कुछ पा ले अनमोल ।। बोल ।।
औपाधिक सम्बन्ध है सारे, राग द्वेष के जाल पसारे
इनमे क्यो तू मुग्ध बना रे, ममता बन्धन खोल ।। बोल ।।
अपना सोया देव जगा ले, शुद्ध चेतना दर्शन पा ले
अपनी जय जयकार गुजा ले, बाहर मे ना डोल ।। बोल ।।
कितना सुन्दर जीवन पावन, कर ले तू अपना मन साधन
बरसेगा "शांति" का सावन खुद से खुद को तोल ।। बोल ।।

ससार के प्राणियों को अति दुर्लभ ऐसी यह मन की शक्ति मानव को मिली है। अन्य गति के जीवो को भी यह शक्ति मिली, लेकिन मनुष्य के समान वे उस शक्ति का उपयोग नही कर सकते। देवता भी नही। देव गति मे भी साधना और सयम सभव नही। मनुष्य ही मन की शक्ति को निरावाध साधना की ओर गतिशील कर सकता है। सम्यक् विचार, सम्यक् सकल्प, सम्यक् कल्पनाओ मे हम अपना जीवन वदल कर, जीवन को शाति मे ओत-प्रोत कर सकते हैं। कहा है—

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।

हमारे सकल्प सिर्फ हमे ही नही, अन्य जीवो को और आस-पास के वातावरण को भी प्रभावित करते है। हमारे मन मे किसी के प्रति शुभ अशुभ सकल्प पैदा होते है, तव सामने वाले के अत करण मे भी प्रतिक्रिया होती है और अनुकूल प्रतिकूल सकल्प खडे हो जाते है।

वातावरण का प्रभाव .

मान लो एक कमरे मे लगातार ३ हत्यायें हुई। उस कमरे मे कोई प्रवेश करे तो उसमे भी वह क्रूर भावना उत्पन्न हो जायगी—उसके मन मे क्रूरता के भाव जाग उठेगे। यदि किसी कमरे मे महापुरुष वैठे है तो आस-पास मगलमय भावना छा जायगी। क्योकि मन के सकल्पो मे वायु मडल प्रभावित होता है—वैज्ञानिको ने भी इस सिद्धात को मान्यता दी है।

हम सामायिक करते है। सामायिक साधना यदि हम घर के बजाय धर्मस्थान में करें तो हमारी साधना मे निखार आ सकता है। जैसा वातावरण होगा वैसी हमारी भावना

बीमारी, महामारी नही होती । वैरभाव ही नही होता क्योंकि तीर्थंकरो के आभा मडल के कारण वहा का वायु-मडल प्रभावशाली हो जाता है । महर्षि पतजली ने भी अपने पातजल योगदर्शन मे कहा है—

अहिंसा प्रतिष्ठाया तत्सन्निधौ वैर त्याग ॥ ३५ ॥

अहिंसा की दृढ स्थिति हो जाने पर उस साधक के निकट सब प्राणी वैर का त्याग कर देते है । जहा अहिंसा है वहा वैरभाव तिरोहित हो जाता है ।

यदि आपके भीतर स्नेह का झरना है, प्रेम की धारा है तो आप अपने सकल्प विचारो के द्वारा क्रूर व्यक्ति को भी बदल सकते हैं ।

प्रेम का अस्त्र और सर्प·

१०-१५ वर्ष पूर्व की घटना है देशनोक के श्री तोलाराम जी भूरा बडे धार्मिक व्यक्ति थे । करीमगज आसाम मे उनका व्यापार था । अधेरे मे रस्सी समझ कर उन्होने एक साप को उठा लिया । ध्यान मे आते ही उसे बाहर छोड दिया । नौकरो ने सांप को मारना चाहा । उन्होंने मना कर दिया । वे शाम को दुकान जा रहे थे । रास्ते से वे चल रहे थे । उनके पीछे वही सर्प आ रहा था । लोगो ने सेठ जी को चेताया और साप को मारना चाहा । अपनी अधिकार पूर्ण वाणी से सेठ जी ने लोगो को मना कर दिया । सेठ जी दुकान पहुँचे । सर्प सीढियो तक पहुचा था । उन्होंने कहा मैंने जान बूझ कर तुम्हें नही छेडा है । अनजाने हो गया । उन्होने नवकार मत्र और भक्तामर का ध्यान किया । पन्द्रह मिनिट तक सर्प फन

गाम धम्मे, नगर धम्मे, रटठ धम्मे, कुल धम्मे, गण धम्मे, ग्राम धर्म, नगर धर्म, राष्ट्र धर्म कुल आदि ।

जिस परिवार मे, जिस ग्राम मे, जिस नगर मे आप रहते है, उसके प्रति भी आपका कुछ कर्त्तव्य होता है । आपका कर्त्तव्य है कि परिवार ग्राम नगर के बच्चों पर अच्छे और धार्मिक सस्कार हो । उनका व्यावहारिक और नैतिक जीवन शुद्ध बने । इसके लिए योग्य भूमिका बनाने का उत्तरदायित्व आपके ऊपर है ।

बच्चा गर्भ मे होता है, तब से ही उस पर सस्कार पड़ने शुरू हो जाते है । गर्भावस्था मे यदि मा तामसिक पदार्थों का भोजन करेगी, आचार-विचार, खान-पान मे शुद्धता नही रखेगी तो गर्भस्थ बालक पर भी ये सूक्ष्म सस्कार हो जायेंगे और वह बालक बडा होकर वैसे ही व्यवहार करेगा । बच्चों के सस्कारो के प्रति आपको सजगता बर्तनी चाहिए । आप दिनभर कमाई मे लगे रहते हैं । बहने चौका चूल्हा, गपशप, साज शृ गार मे लगी रहती है । कभी आप बच्चो को एक घण्टा अपने पास लेकर बैठते हैं ? कभी आपने बच्चो से पूछा उन्होंने दिन भर क्या किया ? कभी आपने उन्हे धार्मिक पाठ पढाये ? कभी धार्मिक कहानिया उन्हे सुनायी ? आपके बच्चो को २५ अभिनेता-अभिनेत्रियो के नाम अवश्य मालूम होगे । पर क्या २४ तीर्थंकरो के भी नाम याद है ? इसका मतलब है आप बच्चों के सस्कारो के प्रति सजग नही हैं । एक ऐतिहासिक घटना याद आ रही है—

दूध के संस्कार एक मार्मिक घटना :

जोधपुर के महाराजा यशवर्तासिहजी थे । निकट के

राजमाता ने जरा व्यंग्य के स्वरों में कहा—"बहूरानी ! युद्ध में लोहे की खटाखट से डर कर तो बेटा यहां आकर बैठा है। यहां भी तुम खटाखट कर रही हो, अब यहां से यह कहां जा कर छिपेगा।"

महाराजा को बातें चुभ गयीं। वे राजमाता के चरणों में गिर पड़े और भाग आने की क्षमा मांगी। राजमाता ने कहा, "बेटा यह तुम्हारा दोष नहीं। यह मेरी ही गलती का परिणाम है। तुम छोटे थे। मैं तुम्हें दूध पिला रही थी। बीच में ही किसी काम से तुम्हारे पिता जी ने आवाज दी, मैं तुम्हें छोड़ बाहर चली गयी। दासी ने अपना दूध तुम्हें पिलाकर चुप किया। लौट आने पर मुझे मालूम हुआ, तो उलटी करवा-कर वह दूध निकलवाया। जो थोड़ा-सा अंश रह गया था, उसी के कारण तुम में कायरता आ गयी। बेटा, मुझ सिंहनी का दूध पीते तो यह कायरता नहीं आती।"

संस्कार बालकों में

इस दृष्टांत से पता चलेगा कि पुराने जमाने में मातायें दूध के प्रति कितनी सावधान रहती थीं। आज बकरी का दूध, पाउडर का दूध बच्चों को मिल रहा है। माताएं अपने बच्चों को अपने बदन पर नहीं पिलातीं। बदन पर पिलाने से सौन्दर्य में न्यूनता आती है। ऐसी धारणा सर्वत्र फैल रही है। पाश्चात्य संस्कृति का यह गलत प्रभाव आप पर छा रहा है। बच्चों के प्रति आप उदासीन बने हुए हैं। उनकी उपेक्षा कर रहे हैं। लापरवाही बरत रहे हैं। भविष्य के खतरे का आभास भी आपको नहीं हो रहा है। सन्तान से आप बड़ी-बड़ी अपेक्षायें रखते हैं। लेकिन जा रहे हैं आप विपरीत दिशा में। सिर्फ

बच्चो को जन्म देना इतना ही माता-पिता का कर्त्तव्य नही। उन पर योग्य सस्कार हो। जीवन जीने की कला उन्हे सिखाई जाय। विनय और सेवा भाव की जन्म घूटी उन्हे पिलाई जाय। घर मे सस्कार होते है वैसे स्कूलो मे भी सस्कार पड़ते है। स्कूल मे तो विभिन्न जाति, धर्म, उम्र, खानपान, आचार-विचार वाले अन्य छात्रो के सम्पर्क मे बच्चा आता है।

आप अपने बच्चो को कॉन्वेंट स्कूल मे भरती करने मे अपना गौरव और प्रतिष्ठा समझते है। क्या माता-पिता की भक्ति के सस्कार वहा है? क्या धार्मिक अध्ययन वहा है? अल्हड़ बीकानेरी की ये पक्तिया है—

> कॉन्वेंट मे पढ़ा है मेरे देश का सपूत।
> सिर पर तभी से सवार है अग्रेजियत का भूत।।
> हिन्दी को समझा है उसने कन्या कोई अछूत,
> इगलिश मे आया फर्स्ट और हिन्दी मे फेल है।
> भगवान की लीला है यह, कुदरत का खेल है।।

जैन दर्शन मे पुण्य ९ प्रकार का बताया है। मन के शुभ सकल्पो से भी पुण्य होता है। मधुर और इष्ट वाणी से भी पुण्य होता है। नमस्कार ही कर लिया तो भी पुण्य का बध हो गया। आप स्वय जानोगे व बच्चो को सिखाओगे तो आपकी पीढ़ी का भविष्य भी चमक उठेगा।

एकाउन्ट मिलावें

आप प्रतिदिन दुकान पर रोजनामा मिलाते है। हिसाब मे गड़बड़ी हो तो बेचैन हो जाते है और हिसाब दुरुस्त करते

होता तब तक नींद भी नहीं लेते। कभी पुण्य और पाप कर्मों का हिसाब भी आपने प्रतिदिन मिलाया ? कभी विचार किया कि मन की शक्ति का कितने मिनिट सदुपयोग किया ? किसी कवि ने कहा है—

> जिंदगी मा केटलु कमाणा रे, जरा सरवालो माड जो
> लाव्या था केटलो ने लई जवानो केटलो
> आखर तो लाकडा ने छाणा रे। जरा सरवालो माड जो।

इन पक्तियों से हम कुछ नसीहत ग्रहण करें। सजग बनें। सावधान रहें। शक्ति का उपयोग सृजनात्मक हो। विध्वंसक न हो। सम्यक् का हम निर्माण करें। मिथ्यात्व का विध्वंस करें। मन का उपयोग सही दिशा में किया तो जीवन में आनन्द और अपूर्व शान्ति छा जायगी। जीवन निरर्थक वह रहा है। शक्ति का अपव्यय हो रहा है। जीवन प्रवाह को हम योग्य दिशा मे मोड दे। उसे सही दिशा दे दें। आगमों मे कहा है—

> "सोही उज्जुअभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
> उत्तरा-३-१२

सरल आत्मा की शुद्धि होती है और सरल आत्मा मे ही धर्म स्थिर रह सकता है।

धुलिया क्षेत्र भाग्यवान है। राजमार्ग पर स्थित है। सन्त सतियों के आवागमन का लाभ आपको सहज रूप में मिलता रहता है। बिना बुलाये ज्ञानगंगा घर आ जाती है।

आचार्य भगवन् जैसी समता विभूति का आपके यहा पर सहज ही पदार्पण हो रहा है। इन ज्ञानगगा मे स्नान करेंगे, शुद्ध बनेंगे, अपना जीवन . .. . . सरलता मे ढालेंगे तो आपके जीवन का राजमार्ग भी मगलमय बन सकेगा।

घुलिया

२८ अप्रैल, १९८४

— 卐 —

७

योग : एक परिभाषा

[1]भक्ति प्रभु की तू करले ओ प्राणी,
कुछ ही दिनों की यह जिन्दगानी।
जाना यहाँ से तुझे तो ओ बन्दे,
अगले जन्म की ले कुछ तो निशानी॥

कहाँ से तू आया, जाना कहाँ है,
रहेगी क्या तेरी सदा ये रवानी।
भक्ति भलाई यदि कुछ न की तो,
रहेगी न तेरी यहाँ कुछ कहानी॥

खोया है बचपन खिलौनों मे तैने,
भोगों के संग लुट गई जवानी।
फिर भी न सम्भला तू, आया बुढ़ापा,
बगिया बनी ये तेरी वीरानी॥

खाना कमाना व बच्चों का पालन,
चिड़िया भी करती है बन कर सयानी।

---

1 तर्ज—यहाँ की मुसाफिर सुहानी रहेगी।

यदि तू भी इतने मे उलझा ओ मानव,
तो बढ कर के इससे क्या होगी नादानी ॥
छल और कपट कर जिसे है कमाया,
वह दौलत भी बन कर रहेगी बेगानी ।
धन धाम सारा रहेगा यहाँ पर,
चलेगी न मग मे कौडी भी कानी ॥
मिला है यह नर तन भलाई कमाले,
वही एक बन कर रहेगी निशानी ।
अगर "शान्ति" पाना ओ बन्दे तुझे तो,
लगा लौ प्रभु मे तू बन कर सुज्ञानी ॥

गीतिका की पक्तियो मे सामान्य से जीवन दर्शन का सकेत प्रस्तुत किया गया है ।

साधना के विभिन्न मार्ग है । इन मार्गों को तत्त्व दृष्टाओ ने, ऋषि महर्षियो ने, ज्ञानीजनो ने विभिन्न सज्ञाये प्रदान की है । इनके विभिन्न आयाम प्रस्तुत किये है । मूल मे साधना का जो एम (aim) है, साधना का जो चरम लक्ष्य है वह एक है । परन्तु उस चरम लक्ष्य तक भिन्न-भिन्न मार्गो से पहुँचा जा सकता है ।

योग मे भक्ति योग, ज्ञान योग, कर्म योग, लय योग, हठ योग, राज योग आदि अनेक प्रकार के साधना मार्ग बतलाये गये हैं । भक्ति योग का अपना अलग स्थान है तो ज्ञान योग, कर्म योग, [illegible] योग का अलग-अलग स्थान है । भक्ति योग एक सीमा तक चलता है और वह भक्ति योग आगे चलकर कर्म योग मे रूपान्तरित हो जाता है । और कर्म योग फिर

ज्ञान योग मे और जब योग मे चरम परिणति होती है उस समय इन सब योगो का सहज योग मे परिणमन हो जाता है ।

मन की साधना—सहज योग

इस दृष्टि बिन्दु से प्रभु महावीर की साधना पद्धति सहज योग पर अधिक बल देती है। भगवान महावीर ने हठ योग, कर्म योग और राज योग पर बल नही दिया । उन्होने सहज योग पर बल दिया है । आप कहेगे कि सहज योग किस चिडिया का नाम है। पहली बात तो यह है कि हम योग को ठीक तरह से समझ ले। योग शब्द का शब्दार्थ— "युंजन योग" जोडने को योग कहते है । मैथेमैटिक्स या गणित के हिसाब से हम देखते है कि दो प्लस दो चार, दो और दो का योग चार होगा । जोडने की क्रिया-प्रक्रिया है योग । अब इस योग शब्द के कुछ आध्यात्मिक अर्थ अलग है और उसकी विभिन्न परिभाषाये हमारे समक्ष आई है।

आध्यात्मिक दृष्टि से महर्षि पतंजली ने योग की परिभाषा दी—"योगश्चित्त वृत्ति निरोध-" योग का अर्थ है चित्त-वृत्तियो का निरोध करना। इसके बाद इस परिभाषा का परिष्करण हुआ, संशोधन हुआ । एक आचार्य ने कहा "योग. अशुभ चित्त वृत्ति निरोध" योग का अर्थ है चित्त की जो अशुभ वृत्तिया है उन अशुभ वृत्तियो को रोक देना। यह परिभाषा भी समीचीन नही बन पाती है, क्योकि चित्त की वृत्तिया रुकेगी नही । चित्त वृत्तियो का स्वभाव है बहते रहना। मन का स्वभाव है मनन करना चित्त का स्वभाव है चिन्तन करना। मन को गति करने से रोक नही सकते। चित्त

को चिन्तन करने मे रोक नही सकते । मन हमेशा बहता ही रहता है, बहता ही रहेगा । उसे रोका नही जा सकता ।

हमारी साधना पद्धति इतना सकेत करती है कि आपका चित्त रुकेगा नही । आप उसको कुछ अच्छी दिशा दे दीजिये, दूसरी दिशा मे ले जाइये, अशुभ मे शुभ मे ले जाइये । इस योग की परिभाषा का गम्भीर चिन्तन हुआ, सदियो तक चिन्तन हुआ । वर्तमान आचार्य श्री ने इस पर गम्भीर चिन्तन किया और उसके आधार पर योग की परिभाषा निकली "योगश्चित्त वृत्ति सशोध" योग का अर्थ है चित्त की वृत्तियो का शुद्धिकरण करना । जो हमारा चित्त अशुभ दिशा मे दौड रहा है, विपरीतियो और विषमताओ मे दौड रहा है, विसगतियो मे दौड रहा है, उस मन को मोड कर आप प्रशस्त दिशा प्रदान कर दे, एक शुभ दिशा उसे मिल जाय वह हमारे योग की साधना बन जायेगी । मन को दिशा देना सहज बात नही है । मन की समस्याओ को लेकर हजारो वर्षों से जिज्ञासाये उत्पन्न होती रही है ।

मन एक अश्व

भगवान महावीर के समय मे और उनके पूर्व समय मे भी मन के विषय मे जिज्ञासाये चलती रही है । स्वय केशी श्रमण जो प्रभु पार्श्वनाथ की शिष्य परम्परा मे थे, उन्होने गणधर गौतम के समक्ष प्रश्न रखा—

"मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावइ ।"

यह मन रूपी अश्व बड़ा दुष्ट है । कभी दौड रहा है कभी बहक रहा है । इस दुष्ट घोडे को कैसे वश मे किया जाता है ?

इधर गीता मे वर्णन है कि अर्जुन मन की समस्या मे परेशान होता है और कृष्ण के समक्ष प्रश्न रखता है—

"चचल हि मन कृष्ण ! प्रमाथिवल वदृढम् ।
तस्याह निग्रह मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ।।"

हे कृष्ण ! मन बडा चचल है । वायु के समान वेग वाला है, इसको कैसे वश मे किया जाय ? एक तरफ मन को घोडे की तरह दौडने वाला कहा जा रहा है । दूसरी तरफ मन को पवन कहा जा रहा है। जरा इन उपमाओं पर चिन्तन करे । हमे घोडा कैसा पसन्द आयेगा ? आप तेज रफ्तार वाला चचल, हवा मे बाते करने वाला घोडा पसन्द करेंगे या अडियल घोडा, जो कही पर अड कर खडा हो जाता है । आप स्पष्ट कहेंगे चचल घोडा चाहिये हमे, तेज रफ्तार वाला जो हवा से बाते करने वाला हो । अडियल घोडा लेकर क्या करना है ।

तो जब मन को घोडे की उपमा दी है तो मन भी चचल और तेज रफ्तार मे भागने वाला चाहिये । अडियल घोडा पसन्द नही आता तो मन भी अडियल नही होना चाहिए, तेज गति वाला हो । लेकिन जैसे घोडा इधर उधर भागता है, इस घोडे को वश मे करने वाली लगाम या वलगा हाथ मे रहती है । इसी प्रकार मन का घोडा गतिशील है, तेज रफ्तार वाला है लेकिन ज्ञान रूपी लगाम हाथ मे रहे । जिस दिशा मे दौडना चाहे, उसी दिशा मे दौडे, विपरीत दिशा मे नही जावे । तो मन को साधने का मतलब होगा कि मन को इधर उधर भागने मे बचा कर अच्छी दिशा दे दें ।

साधना का मार्ग दे दे ताकि अनवरत साधना के मार्ग पर दौडता चला जाय । विषय वासना, अहकार, छल कपट मे नही जावे ।

गीता मे मन को पवन कहा है । आप कल्पना करिये कि हवा एक क्षण के लिए रुक जाय तो ससार की क्या दशा होगी । हवा के प्रवाह की तरह हमारे चित्त की वृत्तियाँ इधर उधर बह रही है उनको शुद्ध बनाने के लिए विशुद्ध दिशा दे दे । यह तो योग की शाब्दिक परिभाषा हुई । हमारी साधना का चरम लक्ष्य तो है हम इस सबसे ऊपर उठ कर सहज योग मे पहुँच जावे । जैन शास्त्रो मे योग की परिभाषा है—

कायावाड्मन · कर्म योग ·

मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को योग कहा है । यह प्रवृत्ति अशुभ भी हो सकती है, शुभ भी । इसलिए उसे अशुभ प्रवृत्ति को रोक कर शुभ प्रवृत्ति मे ला सके । यहा "योगश्चित्त वृत्ति निरोध" की परिभाषा फिट बैठ जाती है । सहज योग की बात मे यह तथ्य है । सहज योग का अर्थ है हम जिस क्रिया मे है उसमे खो जाये । हमारे मन की सारी प्रवृत्तियाँ इसके प्रति समर्पित हो । हम खाना खा रहे है उसको पचाने मे चित्त का सहयोग हो और यह विवेक हो कि हम सयम की पुष्टि के लिए, सद् वृत्तियो के पोषण के लिए खा रहे है । जिस काम मे लगे हुए है सर्वतोभावेन उस कार्य के प्रति समर्पित हो जाते है सजगता पूर्वक तो यह साधना योग साधना बन जायेगी, जिसे हम सहज योग कहते है ।

प्रभु महावीर ने साधु चर्या, श्रावक चर्या का विधि-विधान वताया है । वह अधिकाश सहज योग का विधि-विधान है । हमारा सारा चिन्तन इस विषय के प्रति समर्पित हो । आज अधिकाश लोगो मे वह एकाग्रता, तन्मयता, तल्लीनता नही दिखाई देती । मन हमारा विशृंखलित विखरा हुआ है । हम खाना खा रहे है, लेकिन मन दुकान की ओर जा रहा है । दुकान पर बैठे है तो मन घर की ओर भाग रहा है । एकाग्रता नही आ पा रही है । आज का वायु मण्डल, वातावरण कुछ इस प्रकार का वना हुआ है कि इसमे साधना हो पाना वहुत कठिन है ।

केवलज्ञान और आज का वातावरण .

एक प्रश्न वार-वार उठता है—अनेक व्यक्तियो के मानस मे उठता है कि महाराज, आज के जमाने मे मोक्ष क्यो नही होता, मुक्ति क्यो नही होती ? केवलज्ञान क्यो नही होता ? लेकिन वन्धुओ, यह विचारणीय विषय है । जिस वातावरण मे जिस माहौल मे हम जी रहे है, कई वार विचार उठता है कि यह साधनागत वातावरण ही नही है तो केवल-ज्ञान तो वहुत दूर की वात है, क्षणिक मानसिक शान्ति भी मिलना कठिन है । आज हमारे इर्द-गिर्द कैसा माहौल है, कैसा वातावरण है । आज आप घरो मे वच्चो को किस प्रकार के सस्कार दे रहे है ? उन्हे किस प्रकार का वातावरण दिया जा रहा है ? छोटे-छोटे वच्चे है और उनके माता पिता कैसा-कैसा व्यवहार उनके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं । वच्चे उनकी नकल करते है और इसी कारण पूरी परम्परा—पीढी विगडती जाती है । यह टी. वी , वी. डी ओ , आप इस

प्रकार कहे तो चलेगा कि टी वी की बीमारी लेकर आये हैं। डाक्टर कहते हैं कि अब टी. बी की बीमारी खत्म सी कर दी गई है, पहले इसका इलाज नही था । इसमे अनुसधान हुए, टी वी का इलाज किया गया । लेकिन मानसिक टी. बी का इलाज क्या है ? इस प्रकार के अश्लील चित्र आयेंगे, ऐसे केसेट्स खरीद कर लायेंगे, आप शौक से देखेंगे । पाच सात साल के बच्चे भी आपके साथ बैठ कर देखेंगे, आप उन्हे रोक नही सकेंगे । छोटे छोटे बच्चे देखेंगे और आपकी अनुपस्थिति मे वे क्या करेंगे । अभी दो तीन दिन पूर्व ही 3, 4 छोटे छोटे बच्चे, बच्ची ऊपर मे मेरे सामने आकर खेल रहे थे लम्बे-चौडे हाल मे मैं अपना लेखन का काम कर रहा था । बच्चे एक तरफ खेल रहे थे । एक पिक्चर के आधार पर खेल रहे थे । कुली नाम का कोई पिक्चर देखा होगा, मुझे नही मालूम, लेकिन वे छोटे-छोटे बच्चे बच्चिया अभिनेताओ के एक्शन कर रहे थे उसमे "अमिताभ बच्चन ऐसा करता है, वह कादर खान को पीटता है आदि ।" स्टेज पर घूमते हुए चित्र उन्होने देखे होंगे उसकी नकल कर रहे थे । बच्चो के मूह पर कैसे तनाव रहते हैं । अब यह पूरा का पूरा वातावरण जिस ढग का निर्मित हो रहा है, उस ढग से कहे कि केवलज्ञान हो जाय, मोक्ष मिल जाय, यह नितान्त असम्भव बात है । इस वातावरण को इस प्रकार दूषित बनाया जा रहा है । एक तरफ फैमिली प्लानिंग के लिए करोडो रुपये खर्च किए जा रहे है और दूसरी तरफ वातावरण ऐसा बनाया जा रहा है कि अधिक से अधिक वासनाऐं भडकें । वैसे ही संस्कार लेकर आये, सभी चले जा रहे हैं ।

दोष किसको दिया जाय । किसी एक व्यक्ति का दोष

नही । जब वातावरण इस प्रकार का बन जाता है तो साधनात्मक स्थिति का वायु मण्डल नही बन सकता । ऐसी स्थिति मे क्या आशा करें कि साधना, आराधना विशुद्ध रह पायेगी जैसे संस्कारो की स्थिति मे बच्चे-बच्चिया पल रहे हैं । 8, 10 वर्ष के बच्चे-बच्ची माता-पिता के अभाव मे घर मे भी चल चित्र देखेंगे उनकी कापी करेंगे, नकल करेंगे ।

अपनी फ्लैट के बाहर मैदान मे एक बच्ची एक बच्चे पर हाथ उठा रही थी । पडोस की महिला आई, उसने पूछा कि क्यो राजू सगीता लड क्यो रहे हो ? तो उनको जवाब मिला हम लड कहा रहे हैं, हम तो मम्मी डैडी के एक्टिग का रिहरसल कर रहे है । उनके मम्मी डैडी घर मे ऐसा ही करते होंगे, एक दूसरे पर हाथ उठाते होंगे । बच्चे-बच्ची वही काम करेंगे जैसा घर मे देखेंगे । इस रूप मे यह विचारणीय समस्या है । आज साधनात्मक एटमोसफियर प्राय नही मिलता है । पाश्चात्य सस्कृति का अनुसरण करने मे हम तेज है, नकल करने मे माहिर है लेकिन हमारी सस्कृति जो त्याग की सस्कृति है, आराधना, उपासना की सस्कृति है, उसको भूलते चले जा रहे है ।

अपनी संस्कृति :

सन् 75 मे मेरा चतुर्मास उदयपुर मे था । उस समय वहा पर डागलियाजी जो आपको अभी गीतिका सुना गये हैं, वहा पर आये थे । साथ मे बच्चे-बच्ची थे । एक होटल मे ठहरे । उस होटल मे एक अग्रेज महिला ठहरी हुई थी । डागलियाजी ने अपने छोटे बच्चो से कहा कि जाओ मैडम से

गुड मॉर्निंग करो। वह बच्चे महिला के पास गए और कहा—"मैडम गुड मॉर्निंग।" उस अंग्रेज महिला ने उत्तर दिया "नमस्ते कहो, क्या तुम्हारी सस्कृति मर गई जो गुड मॉर्निंग कह रहे हो।" देखिए वे लोग कितना ध्यान रखते है आपकी सस्कृति का और आप कितना ध्यान रख रहे है अपनी सस्कृति का ? यह विचारणीय बात है। कैसा वातावरण बन रहा है और हम चाहे मुक्ति मिल जाय। केवलज्ञान तो दूर रहा वर्तमान जीवन मे शान्ति से नही रह सकते और अगला जीवन नही सुधर सकता। जीवन मे निरन्तर पाप कार्य हो रहे हैं। जो जो हमारी क्रियायें होगी उनकी प्रतिक्रियायें होगी। जो जो एक्शन होगा उसका रिएक्शन होगा। क्रियाओ और प्रतिक्रियाओ का सिद्धान्त वैज्ञानिक सिद्धान्त है। जो कर्म कर रहे हैं उनके फल का सिद्धान्त शाश्वत सत्य है। हम जो क्रियाये कर रहे है, कितना कर्म बन्धन हो रहा है। जो कर्ज ले रहे हैं उसको चुकाना पड़ेगा ही। शास्त्रीय दृष्टि के अनुसार कई भवो के बाद चुकायेंगे। यह नही होगा कि आप उसको हजम कर जायेंगे। अन्दर मे जो कर्म बन्धन हो गया, कर्जा हो गया है उसको चुकाना पड़ेगा। एक छोटी सी घटना का उल्लेख पढा।

कर्ज अदायगी :

एक व्यापारी को व्यापार मे बड़ा लाभ—नुकसान लगा। नुकसान के कारण वह परेशान हो गया। लाखो का घाटा हो गया। फिर भी सम्राट के सामने उसकी प्रतिष्ठा थी, इज्जत थी। वह सम्राट के पास गया और अपनी स्थिति का उल्लेख किया। सम्राट ने कहा तुम मेरे नगर के प्रतिष्ठित नागरिक

हो । जितना पैसा चाहो उतना ले जाओ । उसने एक लाख रुपए सम्राट से उधार ले लिए और लेकर चला जा रहा था अपने घर । भावावेश से उसके मन मे विचार पैदा हुआ कि अब सम्राट कहाँ पूछने वाला है, कहाँ मागने वाला है । अपने को सब रुपया हजम कर जाना है, बैठे-बैठे खाना है, व्यापार वगैरा कुछ नही करना है । मेरी जिन्दगी आराम से निकल जाएगी, बच्चो की भी निकल जाएगी । अब चुकाना कुछ नही है । उसकी नीयत मे फर्क आ गया । मन मे बेईमानी आ गई ।

बन्धुओ, याद रखो कि ईमानदारी और पसीने की कमाई का पैसा मानसिक शान्ति देगा, लेकिन अनैतिकता से उपार्जित पैसा शारीरिक सुविधाये जुटा देगा, फेसिलिटी के साधन हो जायेंगे, लेकिन शान्ति नही मिलेगी । पैसे से मखमल के गलीचे खरीद लेंगे, बढ़िया भवन बना सकेंगे, एयर कन्डीशन्ड प्लान्ट लगा लेंगे सब कुछ खरीद सकते है, लेकिन मन की शान्ति नहीं खरीद सकते, मानसिक शान्ति नही मिल सकती । आज आप अच्छे-अच्छे करोडपतियो को देखें—उनको सुख सुविधाये हैं लेकिन कहीं भाई-भाई मे आपस मे तनाव है, कही पति-पत्नि मे तनाव है, कही पिता-पुत्र मे तनाव है, मस्तिष्क मे टैन्शन है, तनाव है । लेकिन जहा ईमानदारी की कमाई है नैतिकता की इनकम है वहा क्लेश कम होगा । होगा तो आपस मे निपट जाएगा । लेकिन ऐसा आज कौन सोचता है ।

बैलो का कर्ज :

वह व्यापारी मन मे बुरे विचार लिए हुए चला जा रहा था, उसका एक मित्र था तेली, रात्रि में उसके घर पर

रुका, लेकिन उसको नीद नही आ रही थी । राजा ने पैसा लिया उसे हजम करना है । मन मे अनेक योजनाये तैयार कर रहा था । वह पशु की भाषा समझता था । उसके कान मे आवाज आई । तेली के बैल आपस मे बात कर रहे थे । एक बैल से दूसरा बैल कह रहा था कि हम पर इस तेली का कर्जा था । मैं तो आज रात को उसके कर्ज से मुक्त हो जाऊगा और दूसरी योनि मे चला जाऊगा । प्रात काल होते ही मुझे इस योनि से छुट्टी मिल जायेगी ।

दूसरे बैल ने कहा कि मेरा भी कर्जा पूरा होने वाला है । मेरे पर तेली कर्जा मागता है । कुल एक हजार रुपया और मागता है । वह एक हजार रुपया तेली को कल मिल सकता है । कल बैलो की जो दौड हो रही है । सम्राट ने दौड जीतने वाले बैल के लिए एक हजार रुपयो का इनाम रखा है । तेली मुझे अगर इस दौड मे भाग लेने के लिए उतार दे, मैं उसमे जीत जाऊँगा तेली को एक हजार रुपये मिल जायेंगे, मेरा कर्जा चुक जायेगा और मुझे भी इस योनि से मुक्ति मिल जायेगी ।

दोनो बैलो की बातें उस व्यापारी ने सुनी और विचार करने लगा कि बडी अजीब सी बात है कि बैल पर एक हजार रुपया कर्जा है उसको चुकाने के लिए कितनी चिन्ता कर रहा है । उसने सोचा कि इन बैलो की बात सही है या गलत यह देखना चाहिये ।

प्रात काल उसने देखा कि एक बैल मर चुका है । तेली को उसने बताया कि तुम्हारे बैल रात्रि मे इस तरह की बात कर रहे थे । मैंने उनकी बाते सुनी है । उसका परिणाम है

कि एक बैल मर गया है । तेली ने कहा कि दूसरे का भी परिणाम देख लें । यह बैल आज रेस मे दौड रहा है । हजार रुपये की शर्त पर तेली बैल को रेस मे भाग लेने के लिए ले गया । बैलो की दौड हुई और तेली का बैल जीत गया । ज्यों ही एक हजार रुपये तेली के हाथ मे आये कि वह बैल भी समाप्त हो गया क्योंकि उनका कर्जा चुक गया था ।

यह स्थिति उस व्यापारी ने देखी तो वह सोचने लगा कि गजब की बात है । कर्जा न मालूम किस रूप मे लिया होगा । बैल बन कर कर्जा चुका रहा था । कितने वर्षो तक तेली की सेवा करता रहा । उसके विचारो मे परिवर्तन आया कि मै कहा पैसा हजम करने जा रहा था । न मालूम कितने वर्षो तक बैल के रूप मे या और किसी रूप मे कर्जा चुकाना पडेगा । यह बात सामान्य व्यक्ति के भी समझ मे आ सकती है ।

मै बिहार मे तेजपुरा की ढाणी के पास से निकल रहा था, पानी की कुछ बारीक बूंदे आने लगी । मै वहा पर एक रैबारी के अहाते मे उसकी अनुमति लेकर रुका । रैबारी पास मे आया, बैठा और बात करने लगा । बात करते-करते उसने कहा कि महाराज, अमुक गाव मे अमुक सेठ जी हम लोगो को बहुत ठगते है । मैने पूछा कि कैसे ठगते है ? उसने कहा कि महाराज क्या करें, हमें ऊटो के धन्धे के लिये रुपये चाहिये । हम उनसे पाच हजार रुपये उधार लेते है तो वह शुरू मे ही 6 हजार रुपये लिखवा लेता है जब कि हमको 5 हजार ही देता है । फिर ब्याज जोड कर 7 हजार कर देता है, ऐसे ठगता है । मैने कहा कि वह ठगता है तो उससे क्यो

लेते हो ? गाव मे और भी तो सेठ है ? उसने कहा कि हमे ऊट के धन्धे के लिये 20–25 हजार रुपये एक साथ चाहिये, इतने रुपये दूसरा कोई दे नही सकता। मैंने कहा कि हम क्या कर सकते हैं, हम तो उन लोगो को उपदेश ही दे सकते है कि नैतिकता से चलो, ईमानदारी से चलो। वह रेबारी कहने लगा "महाराज, भगवान के घर से कैसे बचेगा, हम सब वसूल कर लेंगे। अगले जन्म मे सेठ को ऊँट बनायेंगे और ऊपर बैठ कर नकेल खीचेंगे और सारा पैसा वसूल कर लेंगे।" उसने मुझे नकेल खीचने को एक्शन करके बताया। मैं आश्चर्यचकित हो गया कि एक किसान भी कर्म सिद्धान्त को समझता है। कर्म सिद्धान्त के अनुसार यह बात सामान्य सी है। आज हम जो कर्म कर रहे है, जैसे वातावरण मे चल रहे हैं उस वातावरण मे कर्म बन्धन हो रहा है।

कर्मों का कर्ज

उस सेठ ने चिन्तन किया, विचार किया कि मैंने जो राजा से कर्ज लिया है उसे किसी न किसी जन्म मे चुकाना पड़ेगा। मैं उसे हजम करने की सोच रहा था, लेकिन हजम नही कर सकूंगा। इस लिये राजा को वापस लौटा रहा हूँ। बैलो की चर्चा सुनी उससे उसका हृदय बदल गया।

हम बार-बार सुनते है किन्तु लगता है चिकने घड़े हो गये है इस लिये असर नही होता है। लेकिन बन्धुओ जो हलुकर्मी होते है उनके हृदय मे चोट पैदा होती है कि क्या कर रहे है।

हम इन बहुमूल्य क्षणो को किस कर्म बन्धन मे लगा रहे है ? हमे सौभाग्य मिल रहा है। वीतराग वाणी की

आचार्य श्री के मुख से अमृत धारा बरस रही है । उसको आप श्रवण कर रहे है लेकिन अन्दर मे कितनी पेठ रही है, इसका चिन्तन करें । अपने अशुभ कर्मो मे बच सके उतना बचें । शुभ की साधना की ओर प्रेरित हो ।

क्षेत्रीय चिन्तन :

पर्युषण के दिनो मे आठ दिन तक ध्यान की साधना चलती रही, प्रवचन विधि की साधना चलती रही । बम्बई क्षेत्र के हिसाब से कहूँ तो इतनी अच्छी साधना कही नही हुई होगी । गावो मे तुलना करें तो उतनी अच्छी नही हुई । शहर के हिसाब से ठीक है । बम्बई मे सबसे ज्यादा यहा हुई यह बिल्कुल ठीक है । यह आचार्य भगवन की तेजस्विता का महान प्रभाव है कि वे जगल मे भी बैठ जाये तो वहाँ भी धर्म ध्यान होता है, साधना होती है ।

चातुर्मास पर्युषण तक ही होता है या आगे भी चलना है ? अभी तो 70 दिन बाकी है । एक धारणा बना रखी है कि "हुआ सवत्सरी का पारणा, छोटे सन्तो का बारणा" "सन्तो का बारणा" का मतलब क्या यह है कि आप अपनी आत्मा को छोड देंगे, अधिक से अधिक जागरण हो । पर्युषणो मे 8 दिन तक जो शक्ति की धारा मिली है, जो करेन्ट मिला है उसको आगे बढावें । जितनी अधिक धर्म साधना आगे बढेगी उतना ही जीवन आगे बढ़ेगा ।

मै आचार्य भगवन की इस देशना को, इस वाणी को अपने टूटे-फूटे शब्दो मे आपके समक्ष रख गया हूँ । आप इस पर चिन्तन-मनन करे और अधिक से अधिक कर्म बन्धन से

बच सके, ऐसा वातावरण निर्मित करें। सबसे बडी बात तो यह है कि आप अपनी बीच की पीढी को बदले। एक व्यक्ति गलत होता है, अनैतिक आचरण मे जाता है तो सारी पीढी विपरीत हो जाती है। आप स्वय मानते हैं कि एक व्यक्ति ने सामाजिक परिस्थिति के विपरीत काम किया, इन्टर कास्ट मैरिज की–अन्तर्जातीय विवाह किया तो उसके बाद क्या हालत होगी, उसकी सन्तति को कैसी हिकारत की दृष्टि से देखा जायेगा ? सामान्य वासना का आवेग इन्सान को कहां ले जाता है। हम इस वातावरण को बदले। कम से कम आप अपने बच्चो को टी वी, वी डी ओ से दूर रखें। इस वातावरण से सस्कार कैसे बन रहे है ? मेरा सकेत यह है कि कर्म बन्धन से बच सके ऐसा वातावरण बनावें। अगर यह स्थिति बनती है तो सहज योग की साधना एव आत्म आराधना सुगम हो जायेगी।

दिनाक 1–9–1984
बोरिवली (पूर्व)
बम्बई।

—□—
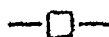
जागरण

चेतन देव को जागरण का उद्‌बोधन करने वाला एक गीत है—

उठ जाग रे चेतन निदिया उड़ा ले मोह राग की ।। ध्रु ।।
कौन कहा से आया है तू जाना कौन मुकाम
किन सम्बन्धों मे उलझा है सोच जरा नादान रे ।। उ. ।।
रिश्ते नाते कितने सच्चे कितना वैभव तेरा
क्या लाया क्या ले जायेगा कहता जिसको मेरा रे ।। उ. ।।
सुत दारा भगिनी बान्धव सब मतलब के संसारी
स्वारथ मे बाधा पड़ने पर देते तुझको गाली रे ।। उ ।।
वीतराग वाणी के द्वारा कर तत्वों का ज्ञान
जड़ चेतन का भेद समझ कर अपना रूप पिछान रे ।। उ ।।
तू ही तो अपना ईश्वर है, अन्तर्दृष्टि कर ले
शुद्ध सनातन "शांति" स्वरूपी दिव्य स्वरूप को वर ले रे ।। उ. ।।

जागरण :

अनादि अनन्त काल से आत्म चेतना सोयी हुई है।

इसीलिए जितने भी लोकोत्तर पुरुष हुए हैं, महात्मा हुए हैं, उन्होंने मानव को जागरण का संदेश दिया है। भगवान महावीर ने भी प्रथम देशना में साधक को संदेश दिया—

उत्थिए नोपमाए।

साधक, उठो! जागृत हो जाओ। प्रमाद त्याग दो। अपनी अन्तिम देशना में भी भगवान ने कहा—

सुत्तेसु यावि पडिबुद्ध जीवी।
न वीससे पंडीअ आसुपन्ने,
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं।
भारंड पक्खीव चरे पमत्ते ।। उत्तरा ४-६ ।।

आशुप्रज्ञ पण्डित मुनि को चाहिए कि वह भारण्ड पक्षी के समान सदा प्रमाद रहित होकर शास्त्र विहित अनुष्ठानों का सेवन करे। प्रमादी लोगों में रहते हुए भी स्वयं सावधान रहे। क्योंकि काल निर्दय है और शरीर अशक्त है। वह अप्रमत्त होकर आचरण करे।

सुषुप्त चेतना

हमारी चेतना, हमारी आत्मा सोयी हुई है। मिथ्यात्व, मोह, अज्ञान और निद्रा का आवरण हमारी आत्मा पर छाया हुआ है। वर्तमान मनोविज्ञान कहता है, २४ घण्टों में आदमी सिर्फ १६ मिनिट जाग रहा है। शेष समय वह सो रहा है। बात अटपटी लगेगी। लेकिन इसे समझ लो। आम आदमी १६ घण्टे जागता है। यह जागरण नहीं। बहुत सारे कार्य वह सुषुप्ति में ही करता है। अभी व्याख्यान से आप उठेंगे। आपके हाथ जेब में जायेंगे। [illegible] की चाबी निकालेंगे,

साइकिल पर सवार होओगे, नुक्कड पर साइकिल अपने आप मोड़ लेगी, आप दुकान पर चले जाओगे। यह सारे काम नित्य के अभ्यास मात्र का परिणाम है। इसमे आपको कुछ सोचना नही पडता। यह अभ्यास की प्रवृत्ति है। इसे जागरण नही कहेंगे। हाँ! आप रास्ते चल रहे है। सामने कोई पिस्तौल तान के खडा हो जाय। आप कुछ सोचना शुरु करेंगे। यह जागरण अवस्था है। यह हुई मनोविज्ञान की बात।

निद्रा : द्रव्य और भाव :

अध्यात्मिक दृष्टि से जीवन जागरण के क्षण बहुत कम आते हैं। निद्रा दो प्रकार की है। द्रव्यनिद्रा और भावनिद्रा। हम सोते हैं वह द्रव्यनिद्रा है। आत्मा से विमुख प्रवृत्तिया भावनिद्रा हैं। चौवीस घण्टों मे कितने क्षण आते हैं जब आप आत्मा के प्रति सजग होकर सोचते हैं? क्या हितकर है क्या अहितकर है—इस पर विचार करते है? बहुत सारे कार्य आपके जागते हुए भी जागृति अवस्था के कार्य नही। वे भावनिद्रा अवस्था के कार्य हैं। भावनिद्रा मे जागरण कब पैदा होता है? चेतना को झटका लगता तब आप भावनिद्रा मे जाग उठते हैं।

विवाह बनाम व्याधि :

महाराष्ट्र के सन्त समर्थगुरु रामदास विवाह वेदी पर खड़े थे। मन्त्रोच्चारण से विवाह विधि सम्पन्न हो रही थी। पडित ने उच्चारण किया "सावधान" रामदास सावधान हो गये। विवाह मडप मे भाग निकले जगलों मे। "सावधान" इस शब्द ने बिजली के झटके (करट) का काम किया। अर्थ

ने चेतना को जगाया। मैं किन बंधनों में फंस रहा हूँ—मुझे सावधान होना चाहिए। आत्मा को बंधनों से मुक्त रखना है। रहीम की ये पंक्तियां हैं—

रहिमन विवाह व्याधि है, सकहु तो लेउ बचाय।
पावन बेडी पडत है, ढोल बजाय बजाय।।

विवाह बंधन है। विवाह करने वाला नये कपड़े पहनेगा, बनठनकर घोडे पर सवार होगा, दूल्हा राजा कहलायेगा। लेकिन यह दो दिन का राजा है। दो दिन का नाटक है। क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि आम तौर पर दो दिन के बाद वह जिन्दगी भर के लिए जोरू का गुलाम बन जाता है। पत्नी (Wife) की प्राप्ति के लिए विवाह है। और Wife के प्राप्त होते ही जिन्दगी भर की चिंताओं को हमने आमंत्रण दे दिया। W-Worries, I-Invited, F-For, E Evertो वाइफ शब्द का विश्लेपण हुआ' Worries Invited for over' संसार के बंधनों में, विवाह के बंधन में हम पड़ते हैं, तब उन रेशम के कीडों के समान अपने आप स्वयं के बनाये जाल में उलझ जाते हैं।

बंधन—अपने ही द्वारा निर्मित :

बस्तर जिले में रेशम के कीडों की खेती होती है। यह कीड़ा अपने मुंह से लार निकालता है, जो धागे के समान होती है। इसी धागे से वह अपने ऊपर सुरक्षा के लिए एक खोल बनाता है और उसी में मकड़ी जैसा बंदिन्न बन जाता है। इन कीड़ों को गरम पानी में उबाल कर रेशम का धागा तैयार किया जाता है। एक मीटर रेशम के लिए चालीस हजार से ज्यादा कीड़ों की हत्या होती है।

आप जैन हैं, चींटी की भी रक्षा करने का आपने प्रण लिया है। क्या आप रेशमी शर्ट, शेरवानी पहनते हैं? आपके बच्चे रेशमी सूट पहनते हैं? महिलाएं रेशमी साड़ियां पहिनती हैं? आपके घरों में ढेर सारे रेशमी कपड़े मिलेंगे, जिन्हें पहनने में आप प्रतिष्ठा और गौरव का अनुभव करते हैं। कहां है आपका जैनत्व? यह कपड़े आपके जैनत्व को बदनाम करने वाले काले झंडे हैं। महिलाओं को प्रसाधन में अधिक रुचि है। प्रसाधन सामग्री जैसे कि शैम्पू, क्रीम, स्नो, नेल पॉलिश वगैरह बाजार में प्राप्त होती है। अखबार उठा के देखो या ये चीजें बनाने वाले कारखानों में जाकर देखो, कितनी क्रूरता और हिंसा के परिणामस्वरूप ये चीजें आपको मिल रही हैं। मैं मूल विषय पर आता हूं। मानव स्वयं ही रेशम के कीड़े की तरह बंधन निर्माण करता है और स्वयं ही उसमें उलझता है। इन बंधनों में जागरण के क्षण कभी-कभी आ जाते हैं। रामदास स्वामी जैसे, जो इन क्षणों को पकड़ ले और जागृत हो जाय, वह सम्भल जाता है।

अद्भुत जागरण—सत्य घटना :

एक घटना याद आई। सत्य घटना है। गंगातट पर कई साधु बैठे थे। बातचीत चल रही थी। हरेक को वैराग्य क्यों और कैसे उत्पन्न हुआ इसका बयान वे दे रहे थे। उसमें का एक बयान भी आप सुन लीजिए—एक महात्मा ने आप बीती यों बताई—"मैं कानपुर के पास एक देहात का रहने वाला कान्यकुब्ज ब्राह्मण था। सिर्फ मां थी जिसने पाला-पोसा, पढ़ाया, बड़ा किया। मां एकाकी जमीन थी। फिर भी सेना में भर्ती हो गया। पदोन्नति करते हुए कर्नल बन गया। मां के आग्रह से और मां की पसन्दगी से विवाह किया। मैं पूना में

श्रौर पत्नी कानपुर मे रहने लगी। एक मात्र माता का छत्र था वह भी चला गया। सेना की नौकरी होने से छुट्टिया नही मिल पा रही थी। नौकरी से इस्तीफा भी मजूर नही हो पा रहा था डेढ दो वर्ष यो ही व्यतीत हो गए। एक दिन अफसर अच्छे मूड मे था, उसने इस्तीफा मजूर कर लिया। अपने प्राविडेंट फड की रकम रुपये बीस हजार और ढेर सारा सामान लेकर कानपुर जाने के लिए ट्रेन मे बैठा। पूना स्टेशन से ही एक व्यक्ति बार-बार मेरे डिब्बे मे आता और उतरता था। बार-बार श्राता था इसलिए उसकी शक्ल ठीक से मेरे ध्यान मे रह गयी। नागपुर तक वह दिखायी दिया। मैं कानपुर उतरा शाम को। सारा सामान घर मे रखा भोजन कर सो गया। थकावट के मारे मुझे नीद लग गयी। करीबन आधी रात को किसी की जोरदार लात मुझे लगी। मैं जाग बैठा। सामने देखता हू तो वही व्यक्ति खडा था जिसे मैंने नागपुर तक देखा था। उसने एक हाथ मे एक अपरिचित व्यक्ति को और दूसरे हाथ मे मेरी पत्नी को पकड रखा था। थोडा होश सभालते ही मैंने पूछा—"भाई यह क्या मामला है ? कौन लोग हो तुम ?"

उसने जवाब दिया—"साहब हम तीनों आपकी जान के ग्राहक-शत्रु है—मैं एक चोर हू। चलती ट्रेन मे चोरिया करना मेरा व्यवसाय है। आप बडी रकम ले कर जा रहे है यह सूचना मुझे मिली। मैं आपका बैग उठाने की फिराक मे था। लेकिन सफलता नही मिली। अतः रात मे जब आप भोजन कर रहे थे, तभी आपके घर मे प्रवेश कर आलमारी के पीछे छिप गया था। आपको नीद लगी। लेकिन आपकी पत्नी जाग रही थी। थोडी देर बाद दरवाजे पर किसी की आहट हुई। आपकी

पत्नी ने दरवाजा खोलकर इन महाशय को अन्दर लिया। उनकी बातो से मुझे पता चला कि ये दोनो आपका काम तमाम कर, धन दौलत के साथ यहा से रफादफा होना चाहते थे। इस व्यक्ति के द्वारा लाये गये छुरे का वार आपकी श्रीमती आपके सीने पर करने जा रही थी। मुझे बरदाश्त नही हुआ। इन दोनो को पकड आपको लात मार जगाया। मै चोर हू। कसूरवार हू। जो सजा देनी हो दीजिए।"

यह भी अपनी किस्म का एक अनोखा "सावधान" था। 'मेरी आत्मा जाग गयी। मैने २० हजार का बैग चोर को दिया। पत्नी और सम्पत्ति उसके प्रेमी को दी। लूगी और बनियान पर मैने घर छोडा, गेरुए वस्त्र पहने' बाद पलट कर भी नही देखा कि पत्नी और उसका यार क्या कर रहे है।" यह है मेरी कहानी।

भाइयो! यह कहानी बहुत कुछ बातें बोल गयी है। इस चोर के अन्तरग मे हमें महात्मा के दर्शन होते हैं। वह कर्नल जिसका काम गोलिया चलाने का है उसके अन्तर मे वैराग्य के अकुर निकल पडे। क्षमा का आविर्भाव वहा नजर आया। पत्नी और उसके प्रियकर को बगैर उपालभ या सजा दिये उसने सारी सम्पत्ति उनको दे दी। यह था जीवन का अमूल्य क्षण। विरले ही क्षण जागरण के क्षण होते हैं। वरना किसी कवि ने कहा है—

सोते सोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी।
सारी जिन्दगी हो भैया सारी जिन्दगी।। सोते।।
जन्म लेते ही इस धरती पर तूने रुदन मचाया।
आखें भी तो खुल नहीं पायी, भूख भूख चिल्लाया।

खाते खाते ही निकल गयी सारी जिन्दगी ।।
बचपन खोया खेल कूद मे यौवन पा बौराया ।
धरम करम का मर्म न जाना, विषय भोग मन भाया ।
भोगो भोगो मे निकल गयी सारी जिन्दगी ।।
धीरे-धीरे बढा बुढापा डगमग डोले काया ।
सबके सब रोगो ने देखी, डेरा खूब जमाया ।
रोगो रोगो मे निकल गयी सारी जिन्दगी ।।
जिसको तू अपना समझा था, वो दे देगा धोखा ।
प्राण गये पर जल जायेगा यह गाडी का खोखा ।
खोखा ढोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी ।।

सुषुप्ति मे बन्धन होते हैं। जागरण मे कर्म बन्धन से बच सकते हैं। प्रमत्त और कषाय अवस्था ही कर्मबंध का कारण है और योगो की प्रवृत्ति भी कर्मबंध का कारण है। मजाक-मजाक मे बात-बात मे हम कर्म बाध रहे है। भगवती सूत्र मे अधिकार आता है। तन्दुलमत्स्य का। एक चावल के दाने जितना मत्स्य था। उसने एक महाकाय मत्स्य को देखा जिसका जबडा खुला था और उसके जबडे मे पानी के हिलोरे के साथ अनेक प्राणी अन्दर जाते थे और बाहर निकलते थे। तन्दुलमत्स्य को अध्यवसाय हुआ। "कितना मूर्ख है यह ! इसकी जगह मैं होता तो सब जीवो को गटक जाता।" उसने किया कुछ नही। लेकिन अपने विचार मात्र से सातवी नरक मे जाने योग्य घोरातिघोर कर्म बाधे।

कर्म बन्धन भावनाओं से :

दिगम्बर साहित्य मे उल्लेख है। [illegible]

भगवान महावीर के दर्शनार्थ निकले। रास्ते मे एक नवजात बालिका पड़ी थी। सास चल रही थी लेकिन उसके शरीर मे भयंकर दुर्गन्ध आ रही थी। श्रेणिक दूसरे रास्ते से महावीर के पास पहुचे। उत्सुकतावश उस बालिका की अवस्था का कथन किया और भगवान ने उनके अतीत के बारे मे पूछा। भगवान ने फरमाया यह कर्मों की लीला है।

सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला भवति।
दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला भवति॥

बालिका पूर्व जन्म मे धनश्री थी। रूप और सौन्दर्य पर भयकर गर्व था, अहकार था। मुनिराज गोचरी के लिए पधारे। उनके मलिन वस्त्र देखकर इसने घृणा की और दुर्गन्धनाम कर्म बाधने के कारण यह जन्म से ही दुर्गन्ध युक्त पैदा हुई। यह दुर्गन्ध बर्दाश्त न होने के कारण उसकी मा नगर वधू ने ही उसे रास्ते पर छोड़ दिया है। श्रेणिक ने पूछा—"भगवन् इसका भविष्य क्या है?" भगवान ने कहा, श्रेणिक, यह आपकी रानी बनेगी। आप चौपड़ खेलते हुए हारोगे, और शर्त के मुताबिक यह आपको घोड़ा बनाकर पीठ पर सवार होगी। इस घटना से आप उसे पहचान पाओगे। जैसा भगवान ने फरमाया, वैसी ही घटनायें आगे चल कर घटी। हुआ यों कि उस बालिका के कुछ समय का ही दुर्गन्ध नाम कर्म का उदय हुआ था। अत फिर सामान्य स्वस्थ हो गई। एक नि सन्तान जुलाहा उसे उठा ले गया। एक उत्सव मे सम्राट श्रेणिक ने उसे देखा, जिसका नाम दुर्गन्धा से गजगणा हो गया था। और उसने अभय कुमार के द्वारा उसे अपने पिता से याचना करके विवाह कर लिया।

जब राजा घोडा बना और रानी ने उस पर वस्त्र डाला तो राजा को प्रभु महावीर की बात याद आ गई और वे हँस पडे। रानी ने हँसी का कारण पूछा। अपनी अतीत की घटना सुन कर उसे वैराग्य हो आया। मन के अध्यवसायो के जो परिणाम होते है और उनसे जो कर्मबध होता है उस पर इस दृष्टात मे काफी प्रकाश पडता है।

ज्वलत सामाजिक समस्या-दहेज

कर्म बध के क्षेत्र मे आज की सामाजिक परिस्थितियो की काफी भूमिका है। आज की सामाजिक परिस्थितिया बडी विचित्र हो गई है। दहेज प्रथा को ही लें—आज लडकी पैदा होती है तो सारे पारिवारिकजन चिन्ताग्रस्त हो जाते है। दहेज का भूत सामने खडा हो जाता है। लडका हुआ तो नोटो की कमाई हो जाती है। मध्यम वर्ग को लडकी के कारण दिन मे तारे नजर आते है। दहेज प्रथा के कारण हिंसा, हत्या, अत्याचारो से प्रतिदिन के अखबार भरे पडे है। जैन, अजैन सभी समाजो मे यह दहेज का भूत पनप रहा है। कौन है इसके जिम्मेदार? समाज का हर व्यक्ति इसके लिए जिम्मेदार है। क्योकि उसने ही इस प्रथा को पोषण एव अनुमोदन मिल रहा है। लडकी के विवाह मे हम दहेज प्रथा की भयकरता के रोने रोते है और अपने पुत्र के विवाह मे चुप्पी साध लेते है। दभ है हमारे आचरण मे। मैने एक गीतिका मे थोडा-सा व्यग्य किया है—

दहेज :—

[illegible] मे [illegible] हम [illegible] जो, [illegible] करे।
कन्या हो [illegible] न [illegible] हम [illegible] करे ॥ टेर ॥

गौरवर्णी सुन्दर कद सरल विनीता हो,
कोकिलकंठी कमलनयनी मधु गीता हो।
कलाओं में दक्ष हाथ जिसके सदा रहे ॥ १ ॥

धन की ना कमी हमें, मील मालिक हम हैं,
लखपतियों की गणना से नहीं कम है।
विद्यावती गुणवती कन्या हम चाह रहे ॥ २ ॥

लन्दन अमेरिका में लड़के हैं पढ़ते,
एल-एल एम, एम. डी. की उपाधियां धरते।
बैरिस्टर डॉक्टर बनेंगे बता रहे ॥ ३ ॥

लड़की भी लॉ या फिर एम. बी बी एस हो,
मधुर हो नेचर और मन भावन फेस हो।
बस ऐसी कन्या हो धन की न चाह है ॥ ४ ॥

घूमने का शौक है आपके दामाद को,
मांगता है एक इम्पोर्टेड कार को।
टेलिवीजन सैट की साथ में दरकार है ॥ ५ ॥

फॉरेन का रेडियो, फ्रीज भी तो लेगा वह,
लैंप सैट सोफा सैट घटिया न लेगा वह।
शादी में दे दीजिए और न दरकार है ॥ ६ ॥

दहेज लेने की तो कसम हमने खाई है,
इसलिए पैसा कौड़ी की न सुनवायी है।
लेकिन शान का तो ध्यान आपको बना रहे ॥ ७ ॥

आपकी कन्या को जैसे रुचिकर गहने हों,
फॉरेन की साड़ियों में घटिया न पहने वो।
चंद चांदी के हों बरतन साथ में जना रहे ॥ ८ ॥

हमे तो ना कुछ भी चाहिए श्रीमान जी,
आपके दामाद और कन्या का हो मान जी।
उनके अरमान पूरे करना वता रहे ॥ ९ ॥

धार्मिक परिवार कहाता हमारा है,
सादगी मे होवे शादी सकल्प हमारा है।
सौदेबाजी ठहराव दिखावे का त्याग है ॥ १० ॥

बरातियो को यदि कुछ देना चाहे आप है,
धार्मिक पुस्तकें ही पकडा दो हाथ है।
"शाति" मे सम्पन्न हो सब रीति और रिवाज है ॥ ११ ॥

दहेज प्रथा यह समाज को लगी हुई घुन है।

आम तौर पर देखा जाता है कि समाज के नेता, खुद को सुधारक कहने वाले लोग अधेरे मे पहले ही बडी रकम दहेज मे हथिया लेते है और स्टेज पर दहेज विरोधी होने का स्वाग भरते है।

दहेज प्रथा पनपने मे जितने वर पक्ष के लोग जिम्मेदार है, उतने ही वधू पक्ष के लोग भी है। बोलिया लगायी जाती है। वधू पक्ष की ओर से अपनी लडकी अमीर घरों मे जावे, इसके लिए दहेज का लालच देकर अपना काम साध लेते है।

अब लडकिया भी शिक्षित हो रही है। अपना भला बुरा सोच सकती है। हिम्मत के साथ जो ये लडकियां दहेज का विरोध कर लडके वालो का भडाफोड कर दे तो दहेज मांगने वालो को भी हारकर बैठ जाना है। 'गरीब का घर पसन्द करूँगी लेकिन दहेज मागने वाले के यहा सम्बन्ध

नही करूंगी।' लडकियों के लिये यह प्रतिज्ञा, यह त्याग, करने का वक्त आ गया है। यही पर कमजोरी है। बातें सब करते हैं। त्याग करने की बात आयी कि कतरा जाते हैं।

दहेज की समस्या उग्र स्वरूप धारण करे उसके पहले ही सावधान हो जाना बुद्धिमानी है।

बन्धुओ! यह सामाजिक बुराई है किन्तु फैलती मानसिक कमजोरी से ही है। अत आप इस स्थिति से उठकर जागरण की ओर बढें। सुषुप्ति का त्याग करें और आत्म शाति प्राप्त करें।

धुलिया
३० अप्रैल, १९८४

— 卐 —

वैराग्य रंग अनुरंजित तन मन सब जिसका पावन,
जग बीच रहे तो ऐसे जल कमल लगे मन भावन ।

मुनि वह ज्ञानी है, निज से . ..॥५॥

दैविक सौन्दर्य हो सन्मुख मन किंचित् हो न विकारी,
सब जग वनिताए जिनकी दृष्टि मे प्रिय महतारी ।

वही शुभ ध्यानी है, निज से . ..॥६॥

निज अन्तर शोधन मे ही संयुक्त जिसका पल प्रतिपल,
जो आत्म समाधि मे यो रहता है सुदृढ अविचल ।

'शान्ति' सेनानी है, निज से . ..॥७॥

ज्ञानी एक परिभाषा :

गीतिका की पंक्तियो मे कुछ लाक्षणिक शब्दो की परिभाषाए प्रस्तुत की गई हैं । कुछ शब्द ऐसे हैं जिन्हे हम निरन्तर सुनते रहते है, किन्तु उनकी परिभाषाओ पर, उनके गहनतम अर्थों पर हमारा ध्यान केन्द्रित नही होता । उन शब्दो मे हमारे कुछ चिर परिचित शब्द है जिनका हमारी साधना से, हमारे व्यावहारिक जीवन से गहरा सम्बन्ध है । हम आत्म साधना, आत्म स्फूर्ति, आत्मानन्द आदि शब्दो का उच्चारण करते है, लेकिन गहनतम रूप मे यह नही समझ पाते कि आत्मानन्द क्या है, आत्म शाति क्या है, आत्मिक आनन्द क्या है । गीतिका मे उन शब्दो का सामन्य सा विश्लेषण है । ज्ञानी किसे कहा जाय, ध्यानी किसे कहा जाय ?

शास्त्रकारो ने ज्ञानी की परिभाषा दी है कि जिसकी चेतना सदा-सदा स्वय मे रमण करती है, जिसकी दशा सदा

स्वभाव मे रहती है, उसे हम ज्ञानी या ध्यानी कह सकते है। व्यवहार मे हम समझते है कि जिसने ३२ शास्त्रों को कण्ठस्थ कर लिया, जिसने आगमो का मन्थन कर लिया है, शब्दात्मक दृष्टि से किसी ने वेदान्त का अध्ययन कर लिया है वह ज्ञानी है। लेकिन वास्तव मे ज्ञानी की परिभाषा इससे कुछ अलग हट कर है। आचाराग सूत्र मे ज्ञानी—पण्डित की परिभाषा आई—महाप्रभु महावीर ने कहा "खण जाणइ पण्डिए" पण्डित वह है, विद्वान् या ज्ञानी वह है जो क्षण को जान लेता है, क्षण को समझ लेता है।

हमारे जीवन के अनन्य क्षण व्यतीत होते जा रहे है। इन क्षणो का उपयोग हम किस दिशा मे कर रहे हैं, यह बहुत विचारणीय विषय है। पण्डित की परिभाषा प्रभु ने की कि जो एक क्षण की कीमत को जान लेता है। पण्डित वही है जिसने समय का मूल्य समझ लिया। समय का मूल्य क्या आप ले सकेंगे ? एक क्षण कितना कीमती है, कितना मूल्यवान है यदि इस पर आप विचार करेंगे तो ज्ञात होगा कि ससार की सारी सम्पत्ति देकर भी एक क्षण को खरीद नही सकते। जो क्षण आपके व्यतीत हो गए। कल्पना करिए कि आप २७ वर्ष पूरे कर गये है। अब २७ वर्ष मे से एक क्षण भी वापस लौटना चाहे, वापस प्राप्त करना चाहे तो क्या वापस प्राप्त कर सकेंगे ? २८ वर्ष व्यतीत हुए है उनमे से एक क्षण भी वापस नही आ सकता। ससार की समस्त सम्पदा उसके सामने रख दे लेकिन उस क्षण को लौटा नही सकते। इसलिए भगवान महावीर ने कहा '

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तइ।
अहम्म कुण माणस्स, अफला जन्ति राईओ ॥

जो जो रात्रियां व्यतीत हुई हैं वे पुनः लौट कर नही आ सकती। और जो संसार के द्वन्द्व मे, बुरे आचरण मे, रागद्वेष की परिणति मे हमारी रात्रियें व्यतीत हो रही हैं उन्हे हम फिर प्राप्त नही कर सकते। वे निष्फल चली जा रही है। तो मूल बात है कि समय की कीमत जिसने समझ ली, समय का मूल्य जिसने जान लिया है, वही विद्वान् है, पण्डित है, वही ज्ञानी है चाहे उसने ३२ शास्त्रो का अध्ययन नही किया है, वेद-वेदान्त को नही पढा है। लेकिन जीवन के एक-एक क्षण को जिसने पढ लिया है, उसका मूल्य आंक लिया है वह वास्तव मे विद्वान् है—अन्तरंग दृष्टि से विद्वान है। बाहर की विद्वता अधिकाश तौर पर प्रदर्शन के काम आती है और अन्तर की विद्वता, जिसमे प्रदर्शन नही, दिखावा नही, द्वन्द्व नही, ज्ञान के लिए होती है। जितनी-जितनी आत्म-चेतना अन्दर मे विद्वान् बनेगी, जीवन का मूल्य सही अर्थ मे समझेगी, उतनी-उतनी आनन्द की वृद्धि होती चली जायेगी।

समय का उपयोग :

हम जरा चिन्तन करे कि आज अधिकाशत हमारे समय का उपयोग किस दिशा मे हो रहा है। इतना बहुमूल्य जीवन, इतना बहुमूल्य समय हमारे हाथ में है, लेकिन हम समय को ऐसा जाया करते चले जा रहे है जैसे उसका कोई मूल्य ही नही है। एक-एक क्षण हमारा किन कार्यों मे लग रहा है ? आप व्यापारी है एक-एक पैसे का हिसाब लगाते है। अमुक वस्तु खरीदी उसमे कितना व्यय, कितना पैसा खर्च हुआ, सारा अकाउण्ट मिलायेंगे। लेकिन ज्ञानीजन कहते हैं

कि आप कभी बैठ कर अपने समय का अकाउण्ट भी मिला लिया करें—कितना समय या कितने क्षण प्रमाद में गये, कितने क्षण तक साधना में लगे रहे। कितने क्षण निन्दा-विकथा में लगे रहे। तेरी-मेरी चर्या में कितना समय नष्ट किया। इतने समय की कीमत कितने रुपये, कितने पैसे है। हमने किन कार्यों में समय लगाया। अधिकांश व्यक्तियों के पास समय बहुत है लेकिन उस समय का सद्विनिमय नहीं है, सदुपयोग नहीं है। उसका विपरीत दिशा में उपयोग हो रहा है। घण्टे दो घण्टे का समय साधना के लिए निकालेंगे लेकिन साधना बहुत कम करेंगे। पर निन्दा, विकथा, तेरी-मेरी बातों में समय का उपयोग कर लेंगे। ऐसा कुछ अभ्यास सा हो गया है दूसरों को टटोलने का।

हम स्वयं में छिपी हुई बहुमूल्य निधि को नहीं टटोलते। बाहर में दूसरों को टटोलते हैं कि कौन कैसा है, क्या कर रहा है? जब समय और चिन्तन की शक्ति हमें मिली है स्वयं को टटोलने के लिए, हमारे भीतर कितना शक्ति का स्रोत बह रहा है। कितनी शक्ति भीतर भरी है, हम उन्हें देख लें, जरा निरीक्षण कर लें। यदि एक बार आपकी दृष्टि अपने भीतरी चेतना पर चली गई, अन्दर देखना हो गया तो फिर बाहर देखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अपने अन्दर का आस्वादन ले लिया तो फिर बाहर की बातें सारी फीकी लगें—ऐसा अनुभव होगा। हमें कई बार ऐसा अनुभव होता है—जब हम बैठे हैं, आप लोग आकर पास में बैठते हैं, मैं अपनी दार्शनिक बात बता रहा हूँ, आप अपनी चर्चा प्रारम्भ करते हैं, चाहे सामाजिक हो, पारिवारिक हो, या अन्य किसी प्रकार की हो, एक व्यावहारिकता से बातें हमें सुननी पड़ती हैं,

लेकिन हमारी अन्तर चेतना यह स्पष्टतया हमे सचेत और सावधान करती है कि अन्तर की चर्चा को छोड कर कहा बाहर की चर्चा मे जा रहा है। कहा बाहर के विषय-विवाद मे उलझ रहा है।

आन्तरिक छवि :

आन्तरिक विषय की चर्चा मे पहले रस नही आता, लेकिन यह सब तभी बन सकता है जब कि हम अन्दर का आस्वादन ले लें। हमे आन्तरिक शक्ति का, आन्तरिक आनन्द का रस आ जाय, एक बार भीतर की छवि हमारी दृष्टि मे आ जाय—गीतिका की पक्तिया हैं :—

छवि अन्तर की देखी जिसने, वह फिर बाहर क्या देखे,
अक्षय पर आखें हैं जिसकी, वह क्षण भगुर को क्या देखे।
छवि अच्छी लगती बाहर की, जब तक अतर की नही देखी,
है अच्छी लगती पर घर की, जब तक निज घर की नही देखी।
जिसने चिन्मय घर को देखा, वह पत्थर घर को क्या देखे॥

अन्तर की छवि एक बार हमने देख ली, अतर का आस्वादन एक बार कर लिया, आत्मा की अनुभूति हो गई तो बाहर की चर्चा मे रस नही आयेगा। लेकिन हम ऐसे अभ्यस्त हो गये हैं कि बाहर ही बाहर रस आता है। बाहर के पदार्थों में ही आनन्द मान रहे है। जिस ओर आज का दृष्टिकोण दौड रहा है उसे हम जीवन की विपरीत दृष्टि कह सकते हैं। आज अधिकाशतया उसी दृष्टि के पोषण मे समय जा रहा है, शक्ति जा रही है। जीवन की बहुमूल्य घडियां व्यर्थ जा रही है। प्रभु ने कहा कि जो-जो क्षण बीत रहे हैं

वे वापिस लौट कर नही आ सकते। आपने ४०, ५० या ५५ साल पूरे कर लिये। फिर चाहे कि १८ साल का बन जाऊ तो जो क्षण चले गये, उनको फिर प्राप्त नही कर सकते। लेकिन इतना हिसाब लगा सकते हैं कि १८ से ५५ के हो गये, इस सारे समय का उपयोग हमने किस काम मे किया। किस दिशा मे समय चला गया है। उसका उपयोग कर्म बन्धन मे किया, कर्म मुक्ति मे किया या राग-द्वेष की वृद्धि मे किया? महर्षि व्यास ने कहा है—

नहि मानुषेत् श्रेष्ठतर हि किंचित्।

इस ससार मे मनुष्य से बढ़कर कोई श्रेष्ठ तत्व नही है। वह श्रेष्ठ तत्व आपके हाथ लगा है, उसका उपयोग किस रूप मे करना है, आप चिंतन करें। बाजार मे जाते है तुरई खरीदनी है तो उसका थोड़ा सा टुकड़ा तोड़ कर चखेंगे कि कही खारी या कड़वी तो नही है। आप कोई चीज लेंगे तो पहले दस जगह भाव पूछेंगे। इस व्यावहारिक क्षेत्र मे आप एक-एक पैसे का हिसाब लगाते हैं, लेकिन इस बहुमूल्य जीवन को ससार मे कर्म बंधन के लिए यों ही छोड़ दिया। कभी हिसाब लगाया और चिंतन किया कि हमारी चेतना का क्या हो रहा है?

धर्म स्थान में आ रहे हैं, इस दृष्टि से यहां आते हैं कि हमें साधना करनी है। यहां आकर भी यदि फिजूल की चर्चा मे व्यस्त रहे तेरी-मेरी और राग-द्वेष के बंधन मे व्यस्त रहे तो आत्म-शुद्धि नही कर पायेंगे, कर्मों की निर्जरा नही कर पायेंगे।

जीवन और प्रदर्शन :

आज हमारा जीवन प्रदर्शन का हो गया है । अह न जाने क्या-क्या प्रदर्शन कराता है । जीवन का अधिकाश व्यवहार प्रदर्शन का रहता है । आप घर मे किस पोशाक मे रहते हैं और बाहर कैसी पोशाक पहनते हैं, घर मे लुगी और बनियान पहन कर घूम रहे है या बैठे हुए हैं चाहे वह फटा हुआ ही हो, लेकिन बाहर निकलेंगे तब सूट या सफारी या बढिया धोती और शर्ट पहन कर निकलेगे । कपडा भी बहुमूल्य होगा । यदि बढिया कपडा पहनना अच्छी बात है, तो घर मे भी बढिया कपडा क्यो नही पहनते ? अच्छे कपडो का प्रदर्शन करके, दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि हमारी ऐसी पहुच है, प्रतिष्ठा है, बाजार मे भी प्रतिष्ठा है। आज तो जीवन ही प्रदर्शन का हो गया है । ऐसी स्थिति मे आत्म शाति नही मिल सकती । पहले प्रदर्शन अधिक नही होता था । पहले दुकान के अन्दर माल भरा रहता था । बाहर थोडी जगह रहती थी जहा बैठ कर लेन-देन का व्यवहार होता था । लेकिन आज दुकान अन्दर से खाली है, बाहर फर्नीचर लग गया है, अन्दर चाहे बारदाना ही भरा हो। पहले अन्दर भरा रहता था और बाहर खाली रहता था । आज जीवन की दशा प्रदर्शन की बन गई है । इसका कारण है अहकार—मेरे जैसा कोई दूसरा नही है । 'हम चौडे सडक सकडी' वाली स्थिति हो रही है । आज अहकार सिर पर चढ कर नाच रहा है । ऐसे व्यक्ति विकास नही कर सकते ।

शास्त्रकार कहते हैं कि जिस शिष्य को अहकार आ गया कि मैं गुरु से भी बढ कर हो गया हू । उसका विकास

रुक जाता है। जसी गुरु शिष्य की बात है वैसी ही जीवन व्यवहार की बात है। जिस व्यक्ति के जीवन से अहकार छूट गया वह आगे बढ सकता है । अहकार विकास की अर्गला है। मनुष्य सोचता है कि हम जैसे जमे हुए हैं वैसे ही जमे रहेगे, दुनिया हमारा कुछ नही बिगाड सकती। दुनिया तो कुछ बिगाड सके या नही बिगाड सके लेकिन कभी ऐसा मौका भी आ सकता है जब बेटे भी घर से बाहर निकाल देते हैं। मैं आपको एक रूपक सुना देता हू —

एक सशक्त चोट—सेठ के अहकार पर :

एक सेठ बैठा है अपनी दुकान पर । मुनीम, नौकर-चाकर काम कर रहे हैं, कार्य चल रहा है। एक ८, ९ वर्ष का बालक परिस्थिति का मारा भिखारी बन गया । मा-बाप बचपन मे गुजर गये थे, कोई उसकी देख-रेख करने वाला नही था। रिश्तेदार, जितना पैसा था धीरे-धीरे चूस लेते हैं । वह खाली हाथ रह गया। खाने के लिए रोटी जुटाना मुश्किल हो गया, कुछ बचा नही । रिश्तेदारो ने बारी बाधली कि एक-एक दिन आकर हर घर से भोजन माग लिया करे। एक रोज उस करोडपति सेठ के यहा भोजन की बारी थी । वह सेठ की दुकान पर आकर कहने लगा कि सेठ साहब, रोटी दे दो, पैसा दे दो । सेठ ने देखा कि यह बच्चा कहा से आ गया। बच्चे ने फिर कहा कि आज आपकी बारी है इसलिए मैं आया हू, मुझे भूख लगी है, मुझे कुछ खाने के लिये दे दीजिये । सेठ ने उसकी बात सुनी नही। वह भी अच्छे घराने का बच्चा था, उसने स्वाभिमान से कहा सेठ साहब, आप नही दे सकते तो मेरी बात सुन लीजिये।

यदि नही सुनते हैं तो मैं समझूंगा कि आपके कान नही हैं। फिर भी सेठ उसकी बात नही सुनता। तब उस बालक ने कहा कि आप सुनते नही है। देखते नही हैं तो इतना तो बोल दीजिये कि मेरे यहा नही मिलेगा। यदि नही बोलते हैं तो मैं सोचूंगा कि आपके जीभ नही है। जो गरीब से मधुर शब्द नही बोल सके वह जीभ क्या काम की, जो झूठा प्रदर्शन करती है। ऐसे व्यक्ति क्या काम के, जो यह नही देखते कि हमारे पडोसी के बच्चे भूखे बैठे हैं या भूख से मर रहे है। ऐसे व्यक्तियो की प्रतिष्ठा कैसी, जो एक पैसा भी किसी गरीब भूखे को नही दे सकते। सेवा के कार्य मे पैसे का सदुपयोग नही कर सकते।

वह बच्चा सेठ से कहता ही जा रहा था और सेठ सुन नही रहा था। एक फक्कड महात्मा बच्चे की बात सुन रहा था। उसने सोचा कि यह बच्चा कितनी देर से चिल्ला रहा है, रोटी-पैसा माग रहा है और सेठ उसकी तरफ देख ही नही रहा है। उसने सेठ से कहा कि इस बच्चे की ओर देखो, यह कितनी देर से रोटी माग रहा है और आप ध्यान ही नही दे रहे हो। सेठ ने कहा कि जा-जा सैंकडो आते हैं, चोटी का पसीना एडी तक आता है तब पैसा कमाया जाता है, चल हट यहा से। यहा पर कुछ भी मिलने वाला नही है।

मनुष्य भूल जाता है कि यह जीवन एक झूले की तरह है। उसका पलडा कभी ऊपर जाता है और कभी नीचे आता है। ऊपर के पलडे मे बैठने वाला यह सोचे कि मैं ऊपर आ गया हू, बाकी सब नीचे हैं, वह नीचे के पलडे मे बैठने वालो

पर मिट्टी फेंकने का प्रयत्न करे तो वह भूल जाता है कि नीचे का पलडा ऊपर आ रहा है और मेरा पलडा नीचे जा रहा है । नीचे वाले जव ऊपर आयेंगे तव हो सकता है कि तुमने उन पर मिट्टी फेंकी तो वे ऊपर पहुचने पर तुम पर थूक दे, तव क्या हालत होगी । व्यक्ति यह नही समझते कि हमारे जीवन मे उतार-चढाव आते रहते है ।

बच्चे के पास मे खडे बावाजी ने सेठ को समझाया कि यह धन और वैभव आपके साथ जायेगा नही, यह बच्चा वेचारा गरीब है, वहुत देर से आपसे दो पैसे माग रहा है, इसको दे दीजिये । सेठ ने वावाजी से कहा कि तुम्हारे जैसे ५६ आते हैं । कमाना खाना तो आता नही और आ गये मागने और बच्चे की हिमायत करने, जाओ यहा से, यहा कुछ नही मिलेगा । वावा ने वच्चे से कहा—"वेटा, यहा कहा आ गये मागने के लिए, यह इसान नही हैवान है ।" वच्चा वहा से चला गया । वावाजी भी अपने मठ मे चले गये ।

वावाजी मठ मे जाकर साधना करने के लिए वैठे, परन्तु उनका मन साधना मे नही लगा । उन्होने सोचा कि सेठ का दिमाग ठीक करना पडेगा । वावाजी ने सेठ की दिनचर्या का पता लगाया कि कव उठता है, क्या करता है, कहा आता है, कहाँ जाता है, कहाँ घूमता है । वावाजी को पता लग गया कि सेठ प्रात ४ वजे नदी पर जाता है और दो घण्टे वाद वापस आता है ।

वावाजी के पास विद्या थी वैक्रियलब्धि की । उससे वे जैसा चाहे वैसा रूप वना सकते थे । वावाजी ने छिप कर

देखा कि सेठजी नदी की ओर जा रहे हैं, सेठजी कुछ आगे निकल गये तब वाबाजी ने १० मिनिट मे हूवहू सेठजी का रूप वना लिया और चले गये सेठजी के घर पर। लडको ने पूछा—"पिताजी, आज आप जल्दी कैसे आ गये ?" वाबाजी ने कहा मैं नदी की तरफ जा रहा था तो मैंने देखा कि मेरे ही जैसा रूप वना कर कोई वहुरूपिया जा रहा है। मैंने सोचा कि यह अपने घर मे घुस गया तो तुम लोग उसको पहचान नही पाओगे, इसलिए मै जल्दी घर आ गया। वेटो ने कहा कि अपने यहाँ लेटरिन वाथरूम आदि की सव सुविधा है फिर भी आप निपटने के लिए वाहर पधारते हैं। सेठ ने कहा कि अव नही जाऊगा।

पिता को धक्के पुत्रो द्वारा .

उधर असली सेठ नहा धोकर घर की ओर लौटा और घर मे घुसने लगा। इधर वावाजी रूपी सेठ ने इशारा किया वेटो को कि देखो इसने मेरे ही जैसा रूप वनाया है। वह घर मे घुस रहा था तो वेटो ने कहा कि कहाँ घुस रहा है ? निकल यहाँ से। धक्के देकर उसको पीछे हटा दिया। सेठजी कहने लगे कि तुम्हे क्या हो गया है ? मुझे ही धक्के देकर वाहर निकाल रहे हो, मैं तुम्हारा पिता हू। तुम्हारा दिमाग तो खराव नही हो गया है ? लडको ने कहा कि तुम पिता वन कर कहाँ से आ गये हो ? हमारे पिताजी तो सामने वैठे हैं। निकालो इसको वाहर। आवाज हुई तो लोग इकट्ठे हो गये। उन्होने लडको से कहा—"तुम तो विनीत लडके हो, पिताजी के साथ कैसा व्यवहार कर कर रहे हो ?" लडको ने कहा कि हमारे पिताजी तो घर के अन्दर वैठे हैं,

यह कोई वहुरूपिया है जो पिताजी की शक्ल वना कर आ गया है, फिर तो किसी ने मुक्का मारा, किसी ने जूता उठाया—पिता की पूजा होने लगी। असली पिता जो पिट रहा था किसी तरह से पिण्ड छुडा कर शहर के वाहर भाग गया। उसको वडा दु ख हुआ कि यह क्या हो गया, मेरे ही वेटो ने धक्के देकर वाहर निकाल दिया।

झूठा अह

कल तक मैं सोच रहा था कि मेरे पास क्या है और क्या नही। मैं अपने को धन कुवेर मान रहा था। और इठला रहा था कि—

वडे भाग्य से मानव देह मिली है
खा-खा योनियो की मार, जीव हुआ लाचार
चोट सीने पै चौरासी लाख मिली है वडे भाग्य से
मेरे वीस हैं दुकान, चार कारें, लोग मुझे मील मालिक पुकारें।
आठ ठेके है सरकारी, सात वेटे एक नारी, चार कुत्ते हैं
शिकारी एक विल्ली है वडे भाग्य से

सेठजी कल तक सोचते थे कि मेरे २० दुकानें है, चार कारे हैं, लोग मुझे मील मालिक सेठ साहव कहते हैं। मेरे पास किस वात की कमी है। जिधर आँख उठाता हू उधर लोग खडे हो जाते हैं, सव सुविधा है। सव कुछ मेरे पास है। लेकिन आज क्या हो गया, जीवन ऐसा वदल गया—

"धनवान होकर खूव इतराया कहे मैंने दिमाग से कमाया,
उल्टी कर्मों की तस्वीर हो गये पूरे फकीर कहे हाय
तकदीर मेरी ढीली है।
वडे भाग्य से मनुष्य देह मिली है।"

आज क्या दशा हो गई। धनवान होकर खूब इतराया। मैंने दिमाग से कमाया, कहाँ से कहाँ पहुचा, मैंने यह किया वह किया लेकिन कर्मों की तस्वीर उलटते ही जीवन कहाँ से कहाँ चला जाता है। थोडा सा चूका कि नीचे उतर गया। बेटो को पता नही था कि असली बाप यही है। इसलिए उन्होने धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

अन्त मे वह सेठ वहाँ के राजा के पास पहुचा। राजा ने सुबह ही सुबह नगर सेठ को देखा तो पूछा "कैसे आये ?" उसने कहा "मेरे जैसा दु खी कोई नही है।" राजा ने कहा—"सेठजी, तुम तो मेरे नगर की शान हो तुम दु खी कैसे हो ?"

बन्धुओ ! जरा चिन्तन करो कि मन मे सुखी हो या दु खी हो। दिन मे मुस्कराते हो लेकिन रात मे नीद नही आती। यही सोचते रहते हो कि यह ऑफीसर आया वह आया, टैक्स वसूल करने वाला आया इनकम टैक्स वाला आया, कितना पैसा देना पडेगा। इसी चिन्ता के कारण नीद नही आती। इससे मनुष्य को शाति नही मिल सकती। शाति मिलेगी साधना करने वाले को, लेकिन इस ओर आपका ध्यान कहा है।

सेठ राजा से कहने लगा—मेरे जैसा दु खी कोई नही है। मैं तो देख कर हैरान हो गया हू। मैं प्रात काल निवृत्त होने और स्नान करने के लिए नदी पर गया था। पीछे से एक बहुरूपिया मेरे जैसा रूप बना कर आया और मेरे घर मे घुस गया। बेटे उसको पहचान नही पाये, इसलिए उन्होने उसको अपना पिता समझ लिया और बहुरूपिये के कहने से मुझे धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

राजा ने अपने सिपाहियो को आदेश दिया "उ
वहुरूपिये को पकड कर ले आओ।" वावाजी पहले ही से
सोच रहे थे कि ऐसा होने वाला है इसलिए उन्होने सेठ के
बेटो को बुला कर कहा कि तुम्हारा बहुरूपिया पिता राजा
के पास गया है और राजा हम लोगो को बुलावेगा। वहा कैसे
पहचानोगे कि असली पिता मैं हू या वह वहुरूपिया है ?
बेटो ने कहा "हम आपका हाथ पकड कर चलेंगे।" "लेकिन
राजा उलट-पुलट कर बैठा देगा फिर क्या करोगे ?" लडको
ने कहा "आप ही वताइये कि क्या करना चाहिए ?" उसने
कहा—"एक पुरानी वही लाओ, जिसमे शादी विवाह आदि
के खर्च का हिसाब लिखा हुआ है। राजा के सामने खर्च
का हिसाव पूछ लेंगे और जो सही हिसाव वता देगा, उसी
को असली पिता मान लेंगे।" लडके वही निकाल कर लाये
उसने दो हिसाव छाट कर अच्छी तरह याद कर लिए।

राजा के यहा से बुलावा आने पर वह राज्य दरवार
मे गया, उसके बेटे भी साथ मे गये।

राजा ने लडको से पूछा "वताओ तुम्हारा असली
पिता कौन है ? पहले जो धोखा देकर आया वह वहुरूपिया
है या वाद मे आने वाला वहुरूपिया है ?" राजा ने दोनो को
उलट-पुलट करके विठा दिया। और वेटो से पूछा—"वताओ
तुम्हारा असली पिता कौन सा है ?" वेटो ने कहा—"दोनो
की शक्ल एक सी है इसलिए हम नही पहचान सकते कि
असली कौन है और वहुरूपिया कौन है ? लेकिन हमारे
घर के हिसाव-किताव की जो पुरानी वही है। उसमे हिसाव
लिखे हुये हैं। उनमे से हम पूछते हैं वह हिसाव जो सही-सही

वता देगा वही हमारा असली पिता है।" राजा ने कहा—"हाँ यह ठीक है। पूछो इन दोनो से" लडको ने कहा—"आज मे १० वर्ष पहले हमारे बडे भैया की शादी हुई थी, उसमे कितना खर्चा हुआ ? असली सेठ को कहा याद था कि कितना खर्चा हुआ था, कौन याद रखे इस वात को ? सेठजी चक्कर मे पड गये। वावाजी ने कहा—मेरे बडे पुत्र की शादी मे ५५५५७ रु० खर्च हुए थे, आप वही मगवा कर देख लीजिये। लडको ने दूसरा सवाल किया—आज से वारह वर्ष पहले हमारा नया मकान बना था उस समय उसमे कितना खर्चा हुआ था ? वेचारे असली पिता को याद नही था कि कितना खर्चा हुआ था। नकली पिता—वावाजी ने वता दिया कि उस मकान मे ७०८५५ रु० खर्च हुये थे। वहीखाता मगा कर देख लो। मेरे हाथ से खर्चा हुआ था इस लिये मुझे याद है। असली सेठ को राजा ने जेल मे वन्द कर दिया और नकली सेठ—वावाजी को घर भेज दिया। वावाजी घर पर पहुचने के वाद सोचने लगे कि मुझे तो ९९ के चक्कर मे पडना नही है, अपने स्थान पर जाकर साधना करनी है। मुझे तो सेठजी को सवक सिखाना था इस लिए वैक्रिय लब्धि से उनके जैसा शरीर वना कर सिखा दिया है।

वावाजी राजा के पास गये और कहा कि उस वहुरूपिये को मुझे सौंप दीजिए, मै उसको दूसरे रूप मे सवक दू गा। राजा ने सेठ को वावाजी को सौंप दिया। वावाजी ने सेठ से कहा कि तुम स्वतन्त्र हो, जहा जाना चाहो जा सकते हो। सेठजी सोचने लगे कि कहा जाऊ ? घर पर जाऊगा तो लडके धक्के देकर निकाल देंगे। वह सोचने लगा कि

कल मै अहकार मे झूम रहा था । उस वच्चे को दो पैसे देने को तैयार नही था और आज मेरी कैसी दशा हो रही है, अव कहा जाऊ ? आखिर मे सोचा कि उन वावाजी की शरण मे जाना चाहिये जो मुझे शिक्षा दे रहे थे । वावाजी तो पहले ही अपना असली रूप धारण करके अपने मठ मे साधना करने के लिये चले गये थे ।

सीख मिल गई :

वावाजी के आश्रम पर जाकर उसने दडवत किया और कहने लगा—"अव मै आपकी शरण मे आया हू । अव मुझे यही रहना पडेगा, मै आपका शिष्य वनना चाहता हू ।" वावाजी ने कहा—"तुम्हारे जैसा शिष्य मुझे नही चाहिए ।" सेठ कहने लगा—"वावाजी मेरी पूर्व की वातो पर ध्यान मत दीजिये । मै पहले अह भाव मे चल रहा था इसलिये मैने आपकी वात नही मानी और आपको और उस वच्चे को दुत्कार दिया था ।" आखिर मे वावाजी ने कहा—"अव तुम तुम्हारे घर जाओ । अव तुम्हारे लडके तुम्हे धक्का देकर घर से नही निकालेंगे । यह तो सव मेरी ही कला थी । मैने तुम्हारी अक्ल ठिकाने पर लाने के लिए यह सव कुछ किया था । आयन्दा के लिए तुम गरीवो की सहायता करना ।" वह सेठ अपने घर गया और आनन्द से रहने लगा । कुछ दिन वाद वह फिर वावाजी के पास आया और कहने लगा—"मुझे अपनी आधी सम्पत्ति दान-पुण्य के लिए निकालनी है ।" वावाजी ने कहा—"तुम मर्जी आवे जैसा दान-पुण्य करो ।"

जिस वैभव के पीछे और जिस सम्पत्ति के पीछे हम अहकार मे झूमते है वह कितने दिन टिकने वाला है, यह सोचने की वात है । कहावत है कि—

"एके साधे सब सधे, और सब साधे सब जाय"

अपनी प्रिय वस्तु :

हम एक आत्मा को ठीक तरह से साध लें तो सब सध जायेगा।

अकबर बादशाह के समय मे आमेर के महाराजा मानसिंह के तीन महारानिया थी। तीनो ही अलग-अलग स्वभाव की थी। एक बार महाराजा मानसिंह अकबर के दरबार मे गये हुए थे। उधर मझली महारानी के पिताजी बीमार हो गये। मझली महारानी पिताजी से मिलने के लिए उनके घर पर चली गई। उधर महाराजा मानसिंह दरबार से लौट कर आये तो छोटी महारानी के महल मे चले गये। वह चालाक थी। उसने महाराजा से कहा कि मझली महारानी आपकी आज्ञा के बिना ही पीयर चली गई थी। महाराज बहुत नाराज हुए और दूसरे दिन वे मझली महारानी के महल मे आये और कहने लगे "तुम मेरी आज्ञा के बिना अपने पीयर कैसे चली गई ? तुम एक प्रिय वस्तु को साथ लेकर अभी मेरे राज्य से निकल जाओ।" महारानी ने कहा "पहले मेरी बात तो सुनिए। मेरी बात सुने बिना ही मुझे निकलने के लिए कैसे कह रहे हैं ? मेरे पिताजी एक दम बीमार हो गये थे और आप यहा पर थे नही, तो मैं आज्ञा किससे लेती ? मुझे क्षमा करिये।" किन्तु राजा नशे मे बेभान था, कुछ उत्तर दिये बिना पलग पर गिर गया। रानी ने राजा को पलग पर ठीक से सुला दिया और अपनी दासियो से कहा कि दो पालकिया तैयार करो। महारानी ने सोचा कि महाराजा ने मुझे घर से

निकाल दिया है इसलिए यहा से जाना ही पडेगा। उधर महाराजा शराब के नशे मे वेभान पलग पर सो रहे थे। महारानी ने दासियो की सहायता से महाराजा को एक पालकी मे सुलाया और उसको लेकर अपने पिता के घर चली गई। पिता का घर थोडी ही दूरी पर था। वह राजा के साथ अपने पिता के घर पहुच गई। दूसरे दिन प्रात काल राजा होश मे आया तो उसने पूछा "मुझे कौन ले आया यहा पर ?" महारानी ने कहा, "हुजूर, आपने ही कहा था—कि अपनी प्रिय वस्तु को लेकर चली जाओ। मुझे तो आप ही सबसे प्रिय लगते हो इसलिए मैं आपको लेकर यहा चली आई।" आखिर मे मानसिह ने अपने शब्द वापिस लिये और कहा—"तुम्हे देश निकाला नही दे सकता, तुम्हे वापस मेरे साथ महल मे चलना पडेगा।"

यदि हम अपनी प्रिय वस्तु आत्मा को पकड ले, हमारा लक्ष्य आत्म चितन की ओर मुड जाय, स्वय को देख ले तो हमारा जीवन कितना आनदमय हो सकता है। लेकिन हम वाहर की चीजो को देखते हैं इसलिए हमे शाति नही मिलती, आनन्द नही मिलता, सुविवा नही मिलती। पुरुप भौतिक सुख-सुविधा की ओर देखता है इसलिए उसको आत्म-शाति नही है, लेकिन आत्म-शाति नही है तो ये कुछ काम के नही है। स्वय की चेतना पर ध्यान दे। हमारे अन्तरग स्वर भीतर से उठेंगे। आत्मा स्वय पुकारेगी कि तुम क्या कर रहे हो। लेकिन आत्मा की आवाज आपको सुनाई नही देती। आप आत्मा की आवाज को समझे और सोचे कि हमारा समय किधर जा रहा है ? कर्म वन्धन की ओर जा रहा

है या कर्म मुक्ति की ओर जा रहा है? इन सब पर चिंतन-मनन करेंगे तो जीवन आनन्द की ओर गतिशील होगा।

बोरीवली (पूर्व) बम्बई

६—८—८४

—□—

१०
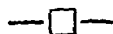
शिक्षा का उद्देश्य-चारित्र निर्माण

जीवन का मूल

वचपन अथवा विद्यार्थी जीवन हमारे जीवन का मूल है। कितना कोमल, कितना निर्मल है यह वचपन! किन्तु यही कोमल जीवन हमारे नागरिकी जीवन की नीव है, वह एक फाउन्डेशन है। अगर यह फाउन्डेशन, यह नीव पक्की हो तो उसके ऊपर निर्मित जीवन का भवन पक्का रहेगा। इस नीव को, फाउन्डेशन को मजबूत करने के इस कार्य मे विद्यार्थियो को खुद को भी उतना ही सक्रिय होना चाहिए जितना कि उनके माता-पिता और अध्यापको को। विद्यार्थियो को अपने आपको कभी भी कमजोर नही समझना चाहिए। वह चाहे किसी भी परिस्थिति मे हो उसे अपनी आर्थिक स्थिति मे अथवा प्रतिभा के क्षेत्र मे अपने आपको कमजोर नही समझना चाहिए। उसे हमेशा यही सोचना चाहिए कि वह अपने किए हुए सकल्प को पूरा करेगा, किसी भी क्षेत्र मे जैसे भौतिकी तथा आध्यात्मिक क्षेत्र मे खुद को ऊँचा उठायेगा, महान् वनेगा।

सभी विद्यार्थियो की प्रतिभाए एक जैसी नही होती। एक क्लास मे बहुत इटेलिजेन्ट लडके भी होते है। और बहुत सारे ऐसे भी होते हैं, जिनकी प्रतिभा, स्मरण-शक्ति कुछ कम होती है। यह तो निसर्ग की देन है, उसने किसी को ज्यादा दी है, किसी को कम ! ऐसी स्थिति मे विद्यार्थियो को अपना धैर्य नही खोना चाहिए, प्रयत्न करने चाहिए।

बच्चो को अच्छे कार्य मे प्रोत्साहित करने का सबसे बडा दायित्व उनके माता-पिता तथा अध्यापको का होता है। कभी भी उन्हे हीन शब्दो से सबोधित नही करना चाहिए। हम देखते हैं बहुत से माता-पिता अपने बच्चे को उसके वैसा न होते हुए भी, उसे बुद्धू तथा निठल्ला कहते है। उसके वैसा न होते हुए भी बुद्धू, निठल्ला इन शब्दो से उसे बुद्धू बनाया जाता है। उदाहरण के लिए हम थॉमस एडीसन की बात करेंगे। थॉमस एडीसन भी अपने विद्यार्थी जीवन मे ऐसा ही एक सामान्य विद्यार्थी था। वह पढाई मे हमेशा पीछे रहता था। एक कक्षा मे चार-चार साल फेल होता था। सभी अध्यापक परेशान हो गए, यह लडका आगे कैसे पढेगा ! उसके वर्ग शिक्षक ने उसे एक चिट्ठी लिखकर अपनी माँ को देने के लिए कहा। वह चिट्ठी लेकर अपनी माँ के पास गया। माँ ने चिट्ठी पढी। उसमे लिखा था—"आपका बेटा बुद्धू है, वह आगे पढ नही सकता, उसे किसी भी काम मे लगा दो।" उसकी माँ की आँखो से आसू आ गए। उसने अपने लाल को उठाया और सीने से लगा लिया और आत्म-विश्वास से कहा—"बेटा, यह दुनिया वाले तुझे भले ही बुद्धू समझे, मगर मै वैसा नही समझती, तुझे मैं दुनिया का महान् आदमी बनाऊगी।" तो प्रतिफल क्या हुआ, आप जानते हैं, थॉमस

एडीसन दुनिया का महान् वैज्ञानिक वना, जिसने विश्व को इलेक्ट्रिसिटी (विद्यु त शक्ति) की देन दी। आज का सारा वैज्ञानिक-विकास इलेक्ट्रीसिटी पर टिका है। उसमे से इलेक्ट्री-सिटी को अलग कर दिया जाए तो सम्पूर्ण वैज्ञानिक विकास चरमरा कर ढह जाएगा।

सस्कृति शीर्षासन कर रही है :

तात्पर्य यह है कि माता-पिता को अपने पुत्र मे ऐसी ही भावना भरनी चाहिए। उसे अच्छी तरह अपने कार्य मे प्रोत्साहन देना चाहिए। हम देखते हैं—आज की शिक्षण पद्धति वहुत ही गिरती चली जा रही है। विद्यार्थी सिर्फ अपने दिए हुए ज्ञान को ग्रहण करने मे ही आत्म समाधान मानता है। शिक्षा किसे कहते है ? यह वह नही जानता। शिक्षा ऐसी हो जिसमे विद्यार्थी सिर्फ अपने दिए हुए ज्ञान मे ही सतोष न मान कर, उस ज्ञान को अधिक वढा कर उसमे अधिक शोध कर सके। चाहे वह आध्यात्मिक ज्ञान हो या भौतिकी, उसमे उसे अधिक से अधिक शोध करना चाहिए। आज की शिक्षा मे तो शोध तथा सशोधन की भावना ही विद्यार्थियो के दिल मे नही दिखती। इसमे सिर्फ विद्यार्थी का ही दोष नही, दोष सारे समाज का है, अपनी शिक्षा पद्धति का है। यह कहा जाए तो चलेगा कि आज अपनी शिक्षा पद्धति शीर्षासन कर रही है। शीर्षासन का मतलब समझते हो ना ! नीचे सर, ऊपर पाँव। आप कहेगे यह कैसे ? किन्तु यह तथ्य है। पुराने जमाने मे विद्यार्थियो मे अपने गुरु के प्रति श्रद्धा होती थी। सभी विद्यार्थी अपने गुरु से विनय से पेश आते थे। उनको वडा मान देते थे। आज सव उल्टा है, आज स्कूलो, कॉलेजो मे प्रोफेसर, शिक्षक लोग खडे होकर पढाते हैं, और उनके

सामने विद्यार्थी पैर फैलाये, आराम से बडे ठाठ से बैंचो पर बैठते हैं। यह हम सब पुराने जमाने से उल्टा व्यवहार देखते हैं, तो हमे कहना पडता है, हमारी सस्कृति शीर्षासन कर रही है। यह मेरा सिद्धात नही है। यह बडे-बडे शिक्षा-शास्त्रियो का कहना है। अमरीका के शिक्षा-शास्त्रज्ञो का कहना है कि आज की शिक्षा पद्धति बहुत ही घिसी पिटी है।

हमारे यहा दस-बीस वर्ष पहले किए गए अनुसधानो-आविष्कारो को बाद मे कॉलेजो मे पढाया जाता है। इससे हमारी शिक्षा पद्धति कितनी घिसी पीटी हैं, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। आज हम देखते हैं, हमारे विद्यार्थियो को दी गई शिक्षा का व्यवहार मे प्राय कुछ भी उपयोग नही होता। हमारे यहा विद्यार्थियो को सिर्फ भूगोल, इतिहास, हिन्दी, विज्ञान, खगोल-शास्त्र पढा दिया जाता है, उसे जीवन-दर्शन नही पढाया जाता। उसे अपना चारित्र कैसे बनाना चाहिए, दुनिया मे कैसा रहना चाहिए, यह नही समझाया जाता। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है, विद्यार्थी अपने आपको चारित्र्यवान बनाये। हम देखते हैं, अपना भारत राष्ट्रीय चारित्र्य की स्थिति मे बहुत ही गिरता चला जा रहा है।

जिस देश के लोग चारित्र्यशील होते हैं, उस देश की ओर कोई भी देश आँख उठाकर नही देख सकता।

शिक्षा का उद्देश्य – चारित्र – निर्माण .

आज शिक्षा के मूल उद्देश्य - चारित्र - निर्माण की ओर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। बौद्धिक विकास की ओर आज की शिक्षा पद्धति ने बहुत ध्यान दिया और उस क्षेत्र मे

विकास भी हुआ है, किन्तु बौद्धिक विकास के साथ तनाव भी बढते जा रहे है। समस्याओ का जाल फैलता जा रहा है। हम देखते है, आज शिक्षण सस्थानो के समक्ष ही नही, समाज एव अभिभावको के समक्ष भी अनेक समस्याए खडी हैं। समाज की अपेक्षा है कि हमारे बच्चे चारित्र्यवान बने। अभिभावक चाहते हैं, हमारी सन्तान अनुशासनबद्ध हो। किन्तु समस्या यह है कि बालको को चारित्र-निर्माण एव अनुशासन-बद्धता की शिक्षा कोई नही देता। और अनुशासनबद्धता के अभाव मे चारित्र-निर्माण, सयम एव सहिष्णुता का विकास कदापि नही हो सकता।

आज जो बालको मे तोड-फोड, हिंसक उपद्रव एव उद्दण्डता-उच्छृखलता बढ रही है, इसका दोष क्या शिक्षा-पद्धति को नही दिया जा सकता है ? बडे-बडे शिक्षा-शास्त्री इस तथ्य को स्वीकार कर रहे है कि हमारी शिक्षा पद्धति मे, हमारे पाठ्यक्रम मे कही न कही दोष अवश्य है।

सन् 1964-66 मे विश्व ख्यातिप्राप्त शिक्षा-शास्त्री डॉ डी एस कोठारी के निर्देशन मे भारतीय शिक्षा आयोग का गठन हुआ, जिसे कोठारी शिक्षा आयोग कहा गया था। उस शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन मे बडे-बडे शिक्षा-शास्त्रियो ने यह स्वीकार किया कि—"A serious defect in School-Curriculum is the absence of provision for education in moral & spiritual values In the life of the majority of Indians, religion is a great motivating force & is intimately bound up wirh the formation of characters in the introduction of ethical values A national system of education, that is related to the

life needs & espirations of the pupil can not afford to ignore this purposal force" (Report—1964-65) "अर्थात् शालाओ के पाठ्यक्रमो का एक गभीर दोष है। वह है नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो की शिक्षा का प्रावधान न होना। अधिकाश भारतीयो के जीवन मे धर्म एक प्रेरक शक्ति है और चारित्र्य निर्माण एव नैतिक मूल्यो के सचार से उसका सबध है। एक राष्ट्रीय शिक्षा के स्वरूप मे जो उसके निवासियो की आवश्यकताओ एव आकाक्षाओ से सम्बन्धित है। इस उद्देश्य पूर्ण प्रेरक तत्त्व (धर्म और अध्यात्म) की उपेक्षा नही की जा सकती।"

इस प्रकार आज की शिक्षा-पद्धति की सदोषता को शिक्षा-शास्त्री भी स्वीकार कर रहे हैं। किन्तु आश्चर्य इस बात का है कि फिर भी इसमे सुधार-परिष्कार क्यो नही होता है। क्यो नही हमारे शिक्षा-शास्त्रियो का ध्यान इस ओर खिचता है? और जब तक हम अपने शिक्षा जगत् मे एक सशक्त परिवर्तन नही करेंगे, उसके उद्देश्य के अनुरूप पाठ्यक्रम का निश्चय और तदनुरूप तकनीकी का विकास नही करेंगे, हमारे समक्ष युवा चेतनाओ मे उद्भूत हजारो समस्याए खडी रहेगी।

आज विद्यालयो मे जहा शारीरिक एव बौद्धिक विकास के समुचित साधन उपलब्ध होगे, वहा शारीरिक व्यायाम का शिक्षण देने वाले अध्यापक होगे, आसन कराने वाले मिलेंगे, और बौद्धिक विकास की प्रचुर सामग्री देने वाले शिक्षक उपलब्ध होगे, किन्तु मानसिक विकास एव भावात्मक विकास की शिक्षा देने वाले, चारित्र-निर्माण का धरातल प्रस्तुत करने वाले कितने शिक्षक मिलेंगे? न तो आज की सरकार इस

वात की चिन्ता करती है, न आज की शिक्षा प्रणाली मे ऐसी कोई विद्या है जो इस अपेक्षा की पूर्ति कर सके।

विपरीत शिक्षा .

मैं यह कहना चाह रहा हू, कि शिक्षा का उद्देश्य है चारित्र-निर्माण। हमारा व्यक्तिगत चारित्र उन्नत हो। किन्तु इस ओर गति कहा हो रही है ? स्पष्ट शब्दो मे कहा जाय तो हमारी गति ठीक विपरीत दिशा मे हो रही है। अपने वालको एव युवको के समक्ष आज जो वायुमडल प्रस्तुत किया जा रहा है वह एकदम अश्लीलता से परिपूर्ण है। पिक्चर, साहित्य, पोस्टर्स सभी कुछ चारित्रहीनता के ही सस्कार प्रस्तुत कर रहे हैं। हम वीज वोते हैं—चारित्रिक पतन के और फल चाहते हैं, चारित्रिक निष्ठा के ! कितनी विपरीतिया हैं हमारे चिन्तन एव आचरण मे।

हम ब्रह्मचर्य की निष्ठा के सस्कार, सत्य आचरण का प्रोत्साहन अथवा नैतिक निष्ठा की ओर कितना ध्यान दे रहे हैं ? यह एक विचारणीय विन्दु है। आज हमारी शिक्षा पद्धति मे मौलिकता तो नाम शेप रह गई है। चारो तरफ नकलीपन अधिक दिखाई देता है। जिसकी एक मिसाल आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

नकली इन्स्पेक्टर :

हमारी शिक्षा पद्धति कितनी दोपयुक्त है, कितनी नकली है यह एक उदाहरण से आपके सामने स्पप्ट करता हू। एक शिक्षा विभाग का इन्स्पेक्टर है, वह किसी भी स्कूल मे इन्सपेक्शन के लिए जाता है तो वह उस स्कूल की तरक्की ही चाहता है, वह कभी भी किसी शाला का रेप्युटेशन नही

बिगाडता। तो एक स्कूल मे वह इन्स्पेक्शन के लिए जाता है। उसका इन्स्पेक्शन करने का एक अलग ढग है। वह स्कूल के एक क्लॉस के सबसे इन्टेलिजिएन्ट लडके को सवाल पूछता है और उसके जवाब से पूरे विद्यार्थियो की स्थिति पर ग्रेड लगाता है। तो वह एक क्लॉस मे जाता है और लडको से कहता है—"मैं एक सवाल ब्लेकबोर्ड पर लिखता हू, जो सबसे प्रतिभाशाली लडका हो वह ब्लेकबोर्ड के पास आकर उस सवाल को हल करे।" एक नम्बर का यानी सबसे प्रथम लडका ब्लेकबोर्ड के पास आता है और सवाल को हल करता है। बडा ही अच्छा जवाब वह देता है। उसके बाद दूसरे नम्बर के लडके को वैसे ही करने के लिए कहा जाता है। वह लडका भी अच्छा जवाब देता है। उसके बाद क्लॉस के तीसरे नम्बर के लडके को बुलाया जाता है तो पाच मिनट तक कोई भी नही आता है। तभी एक लडका ब्लेकबोर्ड के पास आता है। इन्स्पेक्टर को थोडासा शक होता है और उससे वह पूछता है, "तू तो अभी पहला नम्बर का लडका बनकर आया था और अभी वापस तीन नम्बर का बनकर आया है।' तो वह लडका इन्स्पेक्टर को कहता है, "माफ करना सर, मैं वही एक नम्बर वाला लडका हू, मगर तीन नम्बर वाला लडका तो क्लॉस मे नही है, वह बैडमिन्टन का मैच देखने के लिए वाहर गया है, और उसने उससे कहा—मैं उसके सभी कार्य सभालू।" इन्स्पेक्टर को बडा ही आश्चर्य हुआ। उसने वहा खडे हुए क्लॉस टीचर को धमकाया, "तुम यहा मेरे सामने खडे हो और यह लडका तुम्हारे सामने मेरी आँखो मे धूल झोकने की कोशिश कर रहा है और तुम्हारा उसकी ओर ध्यान भी नही है।" तभी वह क्लॉसटीचर वोला, "साहव,

माफ करना मैं क्लॉस के वच्चो को पहचानता नही ।"
इन्स्पेक्टर को वडा अचरज हुआ । वे बोले "क्या आप क्लॉस के वच्चो को पहचानते नही ? रोजाना बच्चो को पढाते हो और उन्हे पहचानते तक नही ।"

विद्यार्थी बन्धुओ । यही स्थिति आज की है । आज स्कूलो, कॉलेजो मे विद्यार्थी और शिक्षको का वह सम्बन्ध नही रहा जो पुराने जमाने मे था । पुराने जमाने मे तो गुरु और शिष्य का सम्बन्ध पिता और पुत्र के सम्बन्ध से बढकर माना जाता था । मगर आज वह सम्बन्ध नही रहा । आज अध्यापक सिर्फ विद्यार्थियो को पढाते है, उनको विद्यार्थियो से कोई आत्मीयता नही होती । कॉलेज मे तो कोई किसी को पहचानता नही । वैसे ही सम्बन्ध ऊपर कथित कहानी मे हैं । उस क्लॉस-टीचर के मुख से यह वात सुन कर इन्स्पेक्टर को वडा आश्चर्य होता है । इन्स्पेक्टर को वडा गुस्सा आता है, उसके पूछने के वाद शिक्षक सही-सही वात वताते हैं । "सर ! माफ करना इस क्लॉस के क्लॉसटीचर तो इस समय यहा पर मौजूद नही हैं, वे वाहर वैडमिन्ट मैच देखने के लिए गये है । उन्होने मुझ पर यहा का कार्य सौंपा है ।" तो इन्स्पेक्टर कहने लगते हैं, "ठीक है, ठीक है, मैं कहा वही ओरीजिनल इन्स्पेक्टर हू । वह इन्स्पेक्टर भी तो .. ।"

तो वच्चो, तात्पर्य यह है, हमारा जीवन कितना नकली होता जा रहा है । शिक्षा जगत् मे भी नकलियत आ रही है ।

हमारा शिक्षा मत्री

यह सव दोप हमारी सामाजिक तथा राजकीय स्थिति का है । हमारी राजनीति ही ऐसी है, जिसमे सिर्फ राज रह

गया है और उसकी सब नीतिया, राजनेताओ ने प्राय पैरो तले कुचल दी है । आज अध्यापको के लिए तथा प्रोफेसरो के लिए ट्रेनिग सेन्टर हैं, उन्हे पढाने की ट्रेनिग दी जाती है । मैं पूछता हूँ—'आज कही शिक्षा मत्री के लिए ट्रेनिग सेन्टर हैं ? उसे शिक्षा जगत के अभ्यास की कोई ट्रेनिग दी जाती हैं ? वह तो चुनाव मे लोगो के द्वारा दिये हुए बहुमत के आधार पर शिक्षा मत्री या अन्य किसी भी विभाग का मत्री बन जाता हैं । भले, उस विषय का उसे ज्ञान भी न हो । आज आठवी कक्षा मे तीन बार फेल हुआ व्यक्ति भी शिक्षा मत्री बन जाता है । वह कैसे इस शिक्षा पद्धति को सुधारेगा ? जो वित्त मत्री ठीक से हिसाब करना भी नही जानता वह वित्त विभाग को कैसे सभालेगा ? इस रूप मे कहा जा सकता है कि हमारा फाउण्डेशन ही गलत हो गया है ।

जीवन एक ड्राइंग रूम :

हमारा जीवन एक ऊर्जा है—एक एनर्जी हैं या एक शक्ति है । इस ऊर्जा या शक्ति का उपयोग हम सृजन किंवा निर्माण की दिशा मे भी कर सकते है और विनाश तोड-फोड की दिशा मे भी कर सकते हैं। हम जीवन को अच्छाइयो से भी भर सकते है और बुराइयो से भी ।

जीवन मे बहुत-सी अच्छाइयाँ भी अपनाई जा सकती है और बुराइयाँ भी । विद्यार्थियो को इसमे से किसे अपनाना चाहिए, यह एक दृष्टात के रूप मे आपके सामने रख रहा हूँ ।

एक सेठ के दो लडके थे। सेठ बडे ही धनवान थे। सेठजी ने दोनो बेटो के लिए लाखो रुपये खर्च करके अलग-अलग दो बगले बनवा दिए। सेठजी की वृद्धावस्था आ गयी

थी। अपने बाद अपनी प्रतिष्ठा, अपना कार्यभार दोनो लडको मे से किस पर सौंपा जाए, इस बात का निर्णय लेने के लिए उन्हे अपने दोनो लडको की परीक्षा लेनी थी। कौन-सा लडका अधिक बुद्धिमान है, यह देखना था। इसलिए एक दिन सेठजी ने दोनो लडको को अपने पास बुलवाया और उन्हे पाँच-पाँच रुपये देकर कहा—"इस पैसे से किसी भी वस्तु को खरीद कर अपने-अपने बगले के ड्राइग रूम को पूरा भर दो।" दोनो लडके पाँच-पाँच रुपये लेकर बाजार मे घूमने लगे।

नगर की गन्दगी से हॉल भरना :

बडा लडका बहुत परेशान हो गया, उसे पाँच रुपये मे ऐसी वस्तु मिल ही नही रही थी, जिससे पूरा ड्राइग रूम भरा जा सके। वह सोचने लगा—जैसे-जैसे बुढापा आने लगा है, वैसे-वैसे पिताजी की बुद्धि घसियाती (सठियाती) जा रही है। उन्हे इतनी-सी भी अक्ल नही, इस महगाई के युग मे कभी पाँच रुपये मे पूरा हॉल भरा जा सकता है ? वह परेशान होकर बगले के फाटक के पास खडा था, तो उसने देखा शहर की गदगी बाहर फेंकने वाली एक म्युनिसिपैलिटी की गाडी उसी तरफ आ रही थी। बडे लडके के मन मे विचार आया, पाँच रुपये मे भला इससे सस्ती चीज कौनसी मिलेगी ? मैं इस कचरे से तथा गदगी से सारे हॉल को भर दूगा। उसने उस गाडी के हरिजन-जमादार को बुलवाया और उससे कहा, "भाई, तुम यहाँ से दो किलोमीटर शहर के बाहर कचरा फेंकने जाओगे, एक ट्रिप के लिए दो लिटर पेट्रोल लगेगा, अगर तुम मेरे घर मे चार-पांच गाडी कचरा डाल दोगे तो तुम्हारा बीस लिटर पेट्रोल बच सकता है, और उसके साथ मैं तुम्हे पाँच रुपये भी दे दूंगा ? "जमादार ने सोचा सेठजी

सस्ते मे कचरा खरीदना चाहते हैं, और इस कचरे का फर्टीलायजर (खाद) बनाना चाहते होंगे। उसने पूछा—"कहाँ डालना है, सेठजी?" बडे लडके ने बगले के ड्राइग रूम की ओर इशारा किया। हरिजन तुरन्त बोला, "सेठजी, आप पागल तो नही हुए। लाखो रुपया खर्च कराकर इतना अच्छा बगला बनवाया है और आप उसको इस गदगी से खराब कर रहे हो।" लडके ने जबाव दिया—"अरे! मैं नही, मेरे पिताजी पागल हुए हैं।" फिर उस हरिजन ने चार-पाँच ट्रक्स कचरा उस बगले मे डाल दिया। बडा बेटा सोचने लगा, चलो पिताजी का कहा हुआ काम पूरा हो गया, सिर्फ पाँच रुपये मे मैंने पूरा ड्राइग रूम भर दिया, और वह अपने पिताजी के पास चल पडा। इधर उस कचरे की तथा गदगी की दुर्गन्ध पूरी कॉलोनी मे फैल गयी।

अगरबत्तियो की महक :

अब छोटा लडका जो कि पाँच रुपये लेकर बाजार मे घूम रहा था। उसे भी ऐसी कोई वस्तु नही मिली जो पूरे हॉल को भर सके। वह परेशान होकर घूमता-घूमता एक मन्दिर के पास आया। मन्दिर मे लगाई हुई अगरबत्तियो की सुगन्ध से पूरा मन्दिर भर गया था। दीपो की रोशनी से पूरा मन्दिर चमक रहा था। छोटे लडके ने सोचा ड्राइग रूम भरने के लिए इन चीजो से और कौन-सी अच्छी चीज हो सकती हैं? उसने पाँच रुपये मे अगरबत्तिया और मोमबत्तिया खरीदी और वह बगले पर आ गया। वहा आकर पूरे ड्राइग-रूम मे उसने अगरबत्तिया और मोमबत्तिया लगा दी। उस अगरबत्तियो की सुवास से और मोमबत्तियो की रोशनी से पूरा ड्राइग रूम सुगन्धित हो गया। वह लडका आनन्दित

होकर अपने पिताजी के पास गया। दोनो लडको ने अपने पिताजी को अपने-अपने वगले पर चलने के लिए कहा। पहले सेठजी वडे लडके के वगले पर गये। वहा जाते ही उन्हे दुर्गन्ध आने लगी। ड्राइंग रूम का दरवाजा खुलते ही दुर्गन्ध की एक भपकी सेठजी को आयी। सेठजी ने तुरन्त अपने नाक पर रुमाल लगा दिया। उन्होने वडे लडके से कहा—"अरे पागल! यह तू ने क्या कर दिया? मैने इतना पैसा लगाकर इस वगले को वनवाया-सजवाया और तुमने उसमे गन्दगी भर कर उसे गन्दा कर दिया।" उस पर वडे लडके ने जवाव दिया, "पिताजी, आपने तो कहा था पाँच रुपये मे पूरा ड्राइंग रूम भर दो, तो मैने पांच रुपये मे इसे भर दिया। वह तो अच्छा हुआ गाडी वाला हरिजन अच्छा था, जिसने पाँच रुपये मे इतना सारा कचरा ड्राइंग रूम मे भर दिया, वरना पांच रुपये मे कही चीज मिलती है?" सेठजी ने अपने सिर को हाथ लगा लिया और कहा, "जैसी तेरी बुद्धि वैसा तूने किया।" अव वे छोटे लडके के वगले पर पहुँचे, वगले का फाटक खुलते ही चारो तरफ सुगन्ध ही सुगन्ध आ रही थी, ड्राइंग रूम खोलते ही सुगन्ध की तीव्रता और वढ गयी। ड्राइंग हॉल का हर कोना-कोना सुगन्ध से भर गया था। चारो तरफ मोमवत्तियो की जगमगाहट मे हॉल आलोकित हो रहा था। यह सव देख कर सेठजी वहुत प्रसन्न हुए, उन्होने छोटे लडके से कहा, "मेरे दोनो लडको मे एक तो बुद्धिमान है, जो जीवन को सुन्दर वनाने की कला जानता है।"

इसका तात्पर्य यह हुआ—जिस तरह सेठजी ने दोनो लडको को पांच-पांच रुपये दिये थे उसी प्रकार प्रकृति ने हमे

पाँच इन्द्रियाँ दी है और हमे कहा है, जाओ, इन पाँच इन्द्रियो से अपने अन्दर की आत्मा को भर दो।

जिस प्रकार मूर्ख बडे लडके ने अपने सुन्दर बगले के ड्राइग रूम मे गन्दगी भर कर उसे गदा कर दिया। उसी प्रकार कुछ मूर्ख लोग अपने इस शरीर के ड्राइग रूम को यानि आत्मा को गन्दगी से भरते हैं। और छोटे लडके, जैसे बुद्धिमान लोग अपने इस शरीर के ड्राइग रूम को यानी आत्मा को सुगन्ध से यानि अच्छे विचारो से भरते हैं।

बच्चो ! हमे सदा यही प्रयत्न करना चाहिए, कि सदा हम अपने शरीर का ड्राइग रूम यानि आत्मा अच्छे विचारो से, ज्ञान से भर दें, ताकि हमारे अच्छे विचारो की सुगन्ध और ज्ञान के दीपो की रोशनी अपने जीवन मे जगमगाती रहे। हमारी आत्मा का कोना-कोना अच्छे विचारो से, आचारो से, सस्कारो से, आलोकित हो।

मुझे आशा है, आप सभी अपने आत्मा रूपी ड्राइग रूम को सदा सुवासित रखेंगे, अपने ज्ञान के प्रकाश से जगत् के अन्धकार को उजाले से भर देंगे और अपनी यशोकीर्ति के द्वारा चारित्र की सुवास से दिग्दिगन्त को महका देंगे और आगे वढेंगे।

मैं चाहता हूँ कि आज के विद्यार्थी अपने जीवन मे ऐसे सकल्प ग्रहण करें कि उनके जीवन की पूरी ऊर्जा ऊर्ध्वमुखी वने और वे दुर्व्यसनो से वचें। जैसे—शराव नही पीना, धूम्रपान नही करना, माता-पिता एव गुरुजनो का अपमान नही करना, परीक्षा मे नकल नही करना, गाली नही देना,

प्रतिदिन प्रात बडो को प्रमाण करना, तोड-फोड नही करना, नैतिक रहना, चोरी नही करना, जुआ नही खेलना आदि ।

यदि इन सकल्पो पर ग्राज का विद्यार्थी चलने लगे तो उसके चारित्र का विकास सहज रूप मे होने लगेगा और उसके जीवन की सौरभ दिग्दिगन्त को सुरभित कर देगी ।